महाबली छत्रसाल

(प्रबन्ध काव्य)

कृष्ण मित्र

असीम प्रकाशन
गाजियाबाद

प्रथम संस्करण : 2013

महाबली छत्रसाल (प्रबन्ध काव्य)

लेखक : **कृष्ण मित्र**

प्रकाशक : **असीम प्रकाशन**
602, मालीवाड़ा, गाजियाबाद (उ.प्र.)
फोन : 0120-4560628

सर्वाधिकार सुरक्षित : **लेखक**

मूल्य : 200 (दो सो रुपये मात्र)

शब्द-संयोजन : **अंकुर ग्राफिक्स, गाजियाबाद**
9899547692

आवरण : **अनिल असीम, गाजियाबाद**
9810426037

MAHABALI CHATRASAL (PRABANDH KAVYA)
by Krishan Mitra

समर्पण

भारत की सांस्कृतिक विरासत
को सादर समर्पित

भूमिका एवम आभार

एतिहासिक पात्रों को अपने लेखन का आधार बनाना रचनाकारों की खोजी प्रवृत्ति को आधार देता है। ऐसे एतिहासिक पात्रों के राष्ट्रीय महत्त्व के व्यक्तित्व पर लेखन का अपना विशेष महत्त्व भी होता है। वास्तव में इन कथानकों के कथ्य के आधार पर काव्य रचना करना राष्ट्रीय सन्दर्भों को और भी रोचक बनाता है। यही रचनाशीलता का एक विशेष गुण भी है।

इसी भावना के परिपेक्ष में प्रस्तुत काव्य, कुछ अलग कहे जाने की ओर अग्रसर है। ''महाबली छत्रसाल'' इतिहास की उल्लेखनीय धरोहर हैं। उन्होंने अपने समय में राष्ट्रीयता का जो प्रमाण प्रस्तुत किया वह विशेष उल्लेखनीय घटना क्रम है। बाल्यकाल से ही अपनी आस्था को राष्ट्र की धरोहर बनाने में उनकी भूमिका का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। बुंदेलखण्ड के इस इतिहास-पुरुष के कथानक को विशिष्ट धरोहर स्वीकार किया जाता है। यवनों के आक्रमणों से आहत उनके हृदय में जो ज्वाल प्रदीप्त होती थी उसको इतिहास आज भी स्मरण करता है।

अपने पिता, को दिये वचन को व्रत स्वीकार कर लगातार उसकी रक्षा को तत्पर रहने वाला वीर बालक औरंगजेब के काल में अपनी जागरूक उपस्थिति दर्ज कराने में सफ़ल हुआ था। यह केवल कल्पित आख्यान नहीं। यह तो तथ्यों पर आधरित विषय है। यह कोई कपोल कलिप या भावना प्रधान पात्र नहीं है।

यह सत्य और विश्वास पर आधातिर घटना क्रम है। यही कारण है कि तत्कालीन रचना धर्मियों ने उस महापुरुषा को धीर प्रशान्त नायक का पद

प्रदान कर उस पर गद्य और पद्य में विचारों की शृंखला को निरन्तर बनाये रखा है।

अपने पिता की वृद्धावस्था के समय उन्हें सम्बल देकर अपनी कर्त्तव्य परायणता का परिचय सक्रियता के साथ प्रस्तुत किया है। बाल्य काल से ही वीरोचित कृर्त्तत्व का परिचय उस समय उन्होंने दिया जब बुंदेलखण्ड के क्षेत्र वासियों को माँ भवानी के प्रति आस्था वान रण वाँ कुरों की आवश्यकता थी। उन्होंने असुर संस्कृति के विरुद्ध देव पुरुषों का रूप दर्शाया और खड़ग के साथ अपने क्षात्र धर्म को प्रदर्शित भी किया। इतिहास ने उनकी वीरता की कथाओं को यत्रतत्र उल्लेखकर उनके पवित्र कृतित्व को स्वीकार किया और पूरे घटनाक्रमों को इतिहास का प्रामाणिक विषय बनाया।

छत्रसाल उस समय की युगीन परम्पराओं को निभाने वाले व्यक्तित्व का नाम स्वीकार किया जाता है। वीरता और पौरुष का सापेक्ष रूप उनके व्यक्तित्व में साकार देखा जा सकता है। राष्ट्रीय अस्मिता की खातिर जिन्होंने माता पिता और भाइयों को बलिदान होते देखा था। जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपनी आहूति थी। पिता ने इस संघर्ष को अपनी ऊर्जा बनाये रखा और आगे भी यह निरन्तर बनी रहे, यह स्वीकार किया। पिता के पद्चिह्नों पर चलते हुए उस वीर पुरुष ने जो भी कृतित्व समाज और राष्ट्र के सम्मुख रखा वह उदाहरण बनकर इतिहास की थाती बन गया।

कथ्य को काव्य में लिपिबद्ध करने के परोक्ष में भी यही भावना लेखक के मन में रही है। एक लघु पुस्तक में छत्र साल की कथा को पढ़ा तो स्वतः मन में यह भावना उठी कि गद्यकार की इसी रचना को आधार बनाकर काव्य में कुछ कहा जाये। यही कथ्य इस प्रबन्ध काव्य का स्वरूप बन गया और पद्यात्मक रूप लेकर-पाठकों के सम्मुख है। विषय वस्तु को उसी रूप में उसी भावना के अनुसार लिपिबद्ध करने का प्रयास किया जाना तभी सम्भव हो सका। कथा वस्तु का तथ्य परक प्रस्तुकरण ही इस रचना का मुख्य आधार बन गया है।

प्रबन्ध काव्य का रूप बनाने के लिए जो कथ्य या आधार कवि के सम्मुख प्रस्तुत हुआ वही काव्य रचना करने में सहायक भी हुआ। झाँसी के

चारों ओर का क्षेत्र जिसे आज बुन्देलखण्ड के रूप में हम जानते हैं, इस रचना का गवाह बनकर प्रमुख रूप से सामने खड़ा है।

चम्पत राया और लाल कुँअर के वीर पुत्र छत्रसाल महानायक बनकर उभरे और अपने भाईयों के साथ इस देश की आन पर बलिदान हो गये। छत्रसाल के दो और भाई बड़ा सारवाहन और छोटा अंगद कथा के वे पात्र हैं जो मुगलों के साथ युद्ध करते हुए बलिदान हो गये। पिता ने भी जीवनभर युद्धों का सामना किया और अन्तिम पड़ाव पर आकर अपने वीर पुत्र छत्रसाल पर मोहित हैं। अब वे अपने आयु के अन्तिम पड़ाव पर आकर जवान पुत्र को राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा को प्रोत्साहित करते हैं।

अपने पिता को निराशा से उभार कर उनका वीर पुत्र सन्नद्ध है और अपने वीर पिता को आश्वस्त करता है। इस प्रकार यह कथा रोचक बनकर नई सम्भावनाओं को तलाश रही है। संवत 1706 से प्रारम्भ यह कथानक वीरता का उदाहरण बनकर रण बाँकुरों की कहानी बन जाता है।

शत्रु के रक्त में माँ भवानी विन्ध्यवासिनी का अभिषेक करने वाले उस वीर बालक की यह कथा वीर वेष में बाल वीरों की टोली बनी युद्ध में अपनी वीरता के लिए उदाहरण बन जाती है। उनके शौर्यपूर्ण इस कथानक में छत्रपति शिवाजी का उल्लेख भी कहानी को नवीन गति प्रदान करता है और इस तरह छत्रसाल का व्यक्तित्व धीरोदत्ता नायक की भूमिका में अवतरित होता है। यह इस कथा वस्तु का चर्मोत्कर्ष है।

ऐतिहासिक पात्रों में अनेक अन्य नामों का भी उल्लेख किया जा सकता है। महाराजा जयसिंह रुहिल्ला खाँ, औरंगजेब, तहवर खाँ आदि सभी पात्र इतिहास के गवाह-पात्र हैं। कथा वस्तु में उनका उल्लेख कथानक के आधार पर ही हुआ है। प्रामाणिकता के लिए इन नामों का उल्लेख इतिहास में अवश्य ही मिल जायेगा।

महाबली छत्र साल की मौलिकता के लिए यही प्रमाण तथ्यपरक स्वीकार किया जाना चाहिए। इन पात्रों के अतिरिक्त जिन अन्यपात्रों का यत्र तत्र उल्लेख मिलता है। उन्हे कपोल कल्पित नहीं मानना चाहिए। वे भी इतिहास के पृष्ठों पर विद्यमान हैं। 'स्वामी प्राण' के सम्बन्ध में भी यही

कहा जा सकता है। प्रबन्ध काव्य में स्वामी की प्रासंगिक कथा का उल्लेख है। छत्र साल अपने जीवन के अन्तिम दिनों जब युद्धों से विरत होकर वन भ्रमण को जाते हैं तो यही स्वामी प्राण उसके व्यक्तित्व को द्विगुणित करने में सहायक होते हैं। यहीं से प्रबन्ध काव्य के उपसंहार का स्वरूप सम्मुख उपस्थित होता है। इस प्रकार कथा प्रवाह निरन्तर आगे की ओर अग्रसर रहता है।

''महाबली छत्रसाल'', प्रबन्ध काव्य की यह कथा पूर्व पीठिका बनकर प्रस्तुत है। कथावस्तु के अनुसार काव्य की गति भी गतिशील होती है। छत्र साल के वैवाहिक परिवेश को प्रस्तुत करते हुए कवि ने वीरों और वीरांगनाओं की युद्ध शैली का विशेष उल्लेख किया है। आठ दशकों के बाद भी अपनी वीर भुजाओं में शक्ति का स्रोत लिए वीर बुंदेला जो शिखर प्रस्तुतत करता है वही इस काव्य की पराकाष्ठा है। यही कारण है कि इस कथानक की कथा वस्तु पुस्तक के प्रारम्भ में देकर कवि ने यह बताने का प्रयास किया है कि काव्य रूप में भी क्रम उसी प्रकार है। विश्वास है इस लघु काव्य प्रबन्ध को पाठकों का सहयोग प्राप्त होगा ही। प्रबुद्धजनों और समालोचकों का आशीष भी मिले ऐसी आशा की जा सकती है। प्रबन्धकाव्य की पुस्तक को साकार रूप प्राप्त करने में जिनका उल्लेख करना आवश्यक है उनमें इन पंक्तियों की प्रथम श्रोता और अपनी सह धर्मिनी श्रीमती निर्मलकान्ता का नाम विशेष रूप से लेना अपना कर्त्तव्य स्वीकार करता हूँ। उन्हीं के प्रोत्साहन के कारण इस काव्य पुस्तक को साकार रूप दे सका हूँ। उनके साथ आपने आयुवान पुत्रों राकेशलव, हिमांशुलव, पुत्रवधुओं, रमालव, आँचललव और पौत्र मनुलव पौत्र वधु, 'एकतालव', पुत्री रचना शर्मा देवेनद्र शर्मा, धेवते ईशान शर्मा, मृगाङ्क शर्मा, कनिष्ठ पुत्री मुक्तालव, धेवते लक्ष्मणलव, पौत्री विभूति संगल, वैभव संगल, सभी का स्नेह स्मरण। उनसे इस पावन प्रबन्ध काव्य के लिए मंगल कामना अपेक्षित है। पौत्री विभूति की जुड़वाँ बेटियों समायरा और अमायरा को आशीष के साथ प्रफुल्लता अनुभव कर, सन्तोष की चरम अभिलाषा वांछित है। उन नवागतों के प्रफुल्ल स्पर्श पर स्वयं को अभिभूत

स्वीकार करता हूँ। मंगल आकांक्षाओं के साथ पुस्तक के प्रकाशन के अवसर पर गौरव पूर्ण अभिव्यक्ति को सादर स्वीकृति।

पुस्तक के प्रकाशक कवि श्रेष्ठ अनिल असीम एवं प्रिन्टैक प्रकाशन संस्थान के कुशल प्रबन्धक आयुष्मान अंकुर के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त कर स्वयं को गौरवान्वित स्वीकार करता हूँ। उनके प्रति पग दिये गये सुझाव प्रबन्ध काव्य के लिए और भी लाभप्रद हुए हैं। अन्त में अपने सुधी पाठक वृन्द की सेवा में यह काव्य पुस्तक सादर समर्पित है। विश्वास है सभी का सहयोग प्राप्त होगा।

स्नेहाधीन

चैत्र नवमी
(रामनवमी)
20 अप्रैल 2013

कृष्ण मित्र, एम.ए., साहित्य रत्न
107 राकेश मार्ग ग़ाजियाबाद
मो.: 09818201978

महाबली छत्रसाल

कथा वस्तु

जन्म और बाल्यकाल

झाँसी के चारों और फैले सौ-सवासौ मील के क्षेत्र को बुंदेलखंड कहते हैं और वहीं के निवासियों को बुंदेले संबोधित किया जाता है। इसी श्रेष्ठ बुंदेला वंश में चम्पतराय नाम का एक वीर पुरुष हुआ है। उसके पराक्रम से ही वह सर्वत्र परिचित हुआ था। उसने शूर-वीर युवकों का एक ध्येयनिष्ठ दल तैयार किया था। क्योंकि उस क्षेत्र पर बार-बार होने वाले मुगलों के आक्रमण का सामना बुंदेलों को करना पड़ता था।

चम्पतराय की धर्मपत्नी थी लालकुँवर। इस दम्पती के तीन लड़के थे। ज्येष्ठ पुत्र सारवाहन, यह मुगल सेना से लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुआ था। दूसरा अंगद और तीसरा छत्रसाल। छत्रसाल का जन्म ज्येष्ठ सुदी 3, संवत 1706, शुक्रवार के दिन हुआ।

वृद्ध चम्पतराय मुगलों से सतत जूझते रहने से छत्रसाल की ठीक से देखभाल नहीं कर पा रहा था। अतः उसे उसके मामा के घर भेज दिया गया। वहीं पर छत्रसाल की सारी वीरोचित शिक्षा-दीक्षा पूरी हुई। सामान्य शिक्षा की अपेक्षा वह शस्त्रास्त्र विद्या में निपुण हुआ। उसकी माता उसे रामायण-महाभारत की कथाएँ सुनाकर और दश की स्थिति का यथायोग्य ज्ञान देकर संस्कार सम्पन्न बना रही थी। छत्रसाल बाल्यकाल से ही भावनाप्रधान और धर्मशील वृति का था। उसके बचपन की एक घटना बहुत ही उद्‌बोधक है।

बुंदेले क्षत्रिय माता विन्ध्सावासिनी को अपनी आराध्य देवी मानते थे। उस समय देवी पूजा के दिन थे। सभी बुंदेलवासी विंध्यवासिनी के महोत्सव

में मग्न थे। उन्हीं बुंदेलों में यह दस बारह वर्ष का बालवीर छत्रसाल अपने शूरवीर मित्रों के साथ मन्दिर में उत्सव देखने गया। उन सभी छोटे वीरों का वेश योद्धा का था। एक छोटा-सा खड्ग उनकी कमर पर लटक रहा था।

यह बालवीरों की टोली देवी पूजा के लिए बगीचे से फूल लाने गयी। इतने में उन्हें घुड़दौड़ की आवाज सुनाई दी। उस ओर नजर फेरते ही उन्हें कुछ दाढ़ी वाले सशस्त्र घुड़सवार दिखाई दिए। उन घुड़सवारों के मुखिया ने पूछा 'यहाँ देवी का मंदिर कहाँ हैं। ''छत्रसाल ने तुरन्त आगे बढ़कर पूछा—'आप लोग देवी की पूजा करने आए हैं?' ''उस मुखिया ने उद्धत प्रत्युतर देते कहा—'हम मूर्ति को तोड़ने आये हैं।' छत्रसाल वह उत्तर सुनकर आग बबूला हो गया। कहने लगा ''क्या बक रहे हो? जबान सँभाल कर बोलो। हमारी माँ भगवती का अपमान करने वालों को हम जीवित नहीं रखते।'' इतना कहते ही तुरन्त उसने अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाल कर एक ही वार से उस मुखिया का सिर धड़ से अलग कर दिया। उसका अनुसरण कर अन्य बालवीरों ने भी अपनी-अपनी तलवारें खींचकर बचे हुए घुड़सवारों पर हमला कर दिया। वे असावधान होने से मारे गये। इस बीच उन बालवीरों में से ही एक बालक तुरन्त मंदिर की ओर दौड़ा और सभी लोगों को उस घटना के प्रति सचेत किया। लोग बगीचे की ओर दौड़ते हुए आ रहे थे कि रास्ते में ही छत्रसाल विजयी मुद्रा में एक हाथ में फूलों की डलिया और दूसरे हाथ में खून से सनी तलवार लेकर शान्त चित्त से आता दिखाई दिया। उस बालवीर का पराक्रम देखकर सभी ''धन्य-धन्य'' कहने लगे।

'हमें देश और धर्म की रक्षा के लिए सुयोग्य नेता मिला है,' ऐसा भाव उनके चेहरों से चमकने लगा। उन्होंने छत्रसाल की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उस समय चम्पतराय अपने वीर पुत्र का पराक्रम देखने के लिए वहाँ नहीं था। जब वह युद्ध से वापस लौटा, तब गाँव वालों ने सब घटना चम्पतराय को बताई। पिता ने हृदय से लगाकर-प्रेम से भुजाओं में समेटकर सहजतासे कहा—

''होनहार बिरवान के होत चीकने पात।''

पिता की मनोव्यथा

निरन्तर युद्ध से चम्पतराय का शरीर बहुत ही जर्जर हो ही चुका था। बुढ़ापे से और अधिक दुर्बल बन गया था। इसलिए उन्होंने छत्रसाल को अपने पास बिठाकर कहा- ''बेटा छत्रसाल! तेरे पराक्रम से मैं तो बहुत आनंदित हूँ। पूरा गाँव तेरी प्रशंसा ही करता है। मानो, उन्हें अपने देश-धर्म की रक्षा के लिए भावी नेता मिल जाने का आनंद हुआ है। बहुत वर्षों से लड़ाई में व्यस्त रहने से अब मुझे भी एक चिंता सता रही है।''

चम्पतराय आगे बोले—''हिन्दू धर्म और समाज का रक्षण ही अपना जीवन व्रत रहा हैं। बुंदेले क्षत्रियों का संगठन करना, यही अपना प्रथम कर्तव्य है। इसलिए मैं ओरछा नरेश और पहाड़सिंह जैसे नीचों की सेवा कुछ काल तक करता रहा। परंतु ये दोनों भी मुगलों से संबंध तोड़ने को तैयार नहीं। इतना ही नहीं तो अब वे दोनों मुझे, जीवित या मृत मुगलों के आधीन करना चाहते हैं।''

थोड़ी देर ठहरकर वे फिर से बोले—'ये दुष्ट मुझे कब पकड़ेंगे और मार डालेंगे इसका भरोसा नहीं। जो देशभक्त बुंदेले हैं उनके सामने यही चिन्ता हमेशा रहती है कि मेरे पश्चात इस धर्मयुद्ध का नेतृत्व कौन करेगा?' कुमार छत्रसाल पिता श्री की चिन्ता दूर करते बोला—

''पिता जी, मैं आपका पुत्र हूँ। माँ ने भी अपने कष्टपूर्ण जीवन का और मातृभूमि की दुरावस्था का चित्र मेरे सामने प्रस्तुत किया है। मेरे बड़े भाई की हत्या मुगलों ने ही की है। यहाँ की हिंदू जनता पर वे सतत अत्याचार करते रहे हैं। लेकिन मैं आपको आश्वासन देकर और आपको चरणों की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं हिन्दुत्व की रक्षा, हिन्दू समाज की सेवा, विदेशियों का नाश और हिन्दू बंधुओं का संगठन करके ही रहूंगा। अब यही मेरा एकमात्र जीवनव्रत है। यही मेरा दृढ़ निश्चय हैं।''

छत्रसाल की वाणी सुनकर चम्पतराय की चिंता बहुत कम हुई। वे उससे कहने लगे—'सब हिन्दुओं का संगठन तो अत्यंत आवश्यक है। पहले वही काम करना होगा। उसके लिए तुझे दक्षिण में जाकर छत्रपति शिवाजी से मिलना होगा। इस विषय में वे ही तुझे योग्य मार्गदर्शन कर सकते हैं।

मैं कल ही फिर से युद्ध के लिए जा रहा हूँ। अब माँ विध्यवासिनी ही तेरी रक्षा करेंगी।''

माता-पिता का दुःखद अन्त

चम्पतराय को पहले ही जानकारी प्राप्त हुई थी कि मुगल सैन्य उसे पकड़ने के लिए आ रहे हैं। कुछ हिन्दुओं की भी सेना उन्हें मदद दे रही है। अतः वे अपनी पत्नी के साथ किसी गुप्त स्थान पर जाने की सोचकर, घर से बाहर निकले। मालवा में सहारा नामक गाँव में उनका एक मित्र इंद्रमणि धंधेरा रहता था। उसी के घर जाना उन्होंने तय किया।

मार्ग में प्रवास में उन्हें असहाय ज्वर पीड़ा का अनुभव होने से घुड़सवारी छोड़ खाट पर सोते हुए जाना पड़ा साथ में केवल चार साथी और पत्नी ही थी।

किन्तु इन्द्रमणि धंधेरा लड़ाई के निमित ही बाहर गये हुए थे। इतने में ही उन्हें पता चला कि ओरछा नरेश सुजान सिंह अपना पीछा करते हुए आ रहा है। तब इंद्रमणि के साथी साहेबराव की सुरक्षा में वे मोरन गाँव की ओर चल पड़े।

सुजान सिंह ने साहेबराव को डराया, धमकाया कि यदि तुम चम्पतराय को हमारे अधीन नहीं करोगे तो तुम्हारा यह सब राज्य हम नष्ट कर देंगे। साहेबराव डर गया और उसने चम्पतराय के साथ विश्वासघात कर, असहाय ज्वर पीड़ित चम्पतराय पर हमला बोल दिया। लालकुँवर ने पति की रक्षा के लिए कमर कस ली। परंतु धंधेरा सैनिकों ने उसे पति तक जाने ही नहीं दिया। अतः लालकुँवर ने यह सोचकर कि शत्रु के हाथों लगने के बजाय स्वयं ही अपना जीवन समाप्त कर दे, उसने अपना खड्ग स्वयं पर चलाकर अपनी जीवन यात्रा समाप्त कर दी। रुग्ण चम्पतराय ने यह दृश्य देखा और उसने भी अपने खड्ग से अपना जीवन समाप्त कर लिया।

अपनी मातृभूमि के लिए, धर्म के लिए, सतत संघर्ष करनेवाले जीवन का इस प्रकार अन्त हुआ। सैनिकों ने मृत चम्पतराय का सिर काटकर मुगल दरबार में पेश किया।

छत्रसाल के माता-पिता जब घर छोड़कर निकले तब वह केवल साढ़े

बारह साल का था। माता-पिता का वियोग वह सह न सका। वह भी सहारा जाने निकला। वहाँ पहुंचते ही उसे माता-पिता के दुःखद निधन की वार्ता सुनाई दी। उससे उसे बहुत बड़ा आघात पहुँचा। उसने माता-पिता की उत्तर क्रिया पूर्ण की; तभी पिता को दिये वचन की याद उसे हो आयी

वह अपने बड़े भाई अंगद के पास देवगढ़ गया। उसे माता-पिता की दुःखद मृत्यु की घटना सुनाई। दोनों बन्धुओं ने परस्पर एक-दूसरे को धीरज बँधाया और आगे की योजना बनाने लगे।

कुछ हिन्दू राजा, जमीनदार और जागीरदारों का चम्पतराय से घनिष्ठ सम्बन्ध था। उन्होंने उन्हें चम्पतराय की मृत्यु की सूचना दी। वे जिन-जिन राजाओं से, जमींनदारों से, जागीदारों से मिले, उन्होंने केवल अपनी हार्दिक सहानुभूति दिखाई, किन्तु प्रत्यक्ष कृति के लिए कोई भी आगे नहीं बढ़ा।

अब उन दोनों भाईयों के सामने सवाल था कि क्या करें? अन्त में दोनों ने विचार दृढ़ किया कि प्रथम लड़ाई के लिये साधन जुटाने होंगे?

कुमार छत्रसाल अपने मामा के गाँव गया। वहाँ जाकर उसने अपने मित्रों को इकट्ठा कर उनका एक दल बना लिया। मित्रों को युद्ध कला, शिक्षा और देश धर्म के विचार-विमर्श के कार्य वहीं होने लगे।

अब कुमार छत्रसाल की उम्र 17 वर्ष की थी। छत्रपति शिवाजी से भेंट कैसे होगी इसकी उसे चिंता थी। उसी समय उसे खबर मिली कि औरंगजेब शिवाजी को पकड़ने के लिए राजा जय सिंह को भेज रहे हैं। छत्रसाल ने तुरन्त विचार किया कि यही अवसर है दक्षिण जाने का। इससे छत्रसाल के दो उद्देश्य सफल होते थे। एक तो छत्रपति शिवाजी से मुलाकात के लिए दक्षिण जाना और दूसरा मुगलसेना की रचना, कृतित्व नजदीक से देखकर जानकारी प्राप्त करना।

उन दोनों भाईयों ने जयसिंह के शिविर की ओर प्रस्थान किया।

ये दोनों वीर चम्पतराय के पुत्र हैं, यह जानकर जयसिंह ने उन्हें अपनी सेना में रख लिया और कहा—'देखो, यदि तुम लड़ाई में कुछ पराक्रम कर दिखाओगे, तो तुम्हें इसी सेना में ऊँचे पद पर बिठा दिया जायेगा।

छत्रसाल ने इस सेना में अठारह महीने बिताये। पुरन्दर किले का घेराव और शिवाजी तथा जय सिंह का करार-नामा इसका उसने प्रत्यक्ष अनुभव

किया था। वीजापुर नगरी पर किये हमले से उसने रणनीति के साथ कूटनीति के दाँव पेच नजदीक से देखे थे। उसी प्रकार मुगल सेना की कमजोर स्थिति कहाँ है इसका भी अनुभव किया था।

एक दिन उसने वार्ता सुनी कि शिवाजी औरंगजेब की कैद से सकुशल निकले और आगरा से होते हुए अपनी राजधानी रायगढ़ आ पहुँचे हैं। छत्रसाल की उत्कंठा अब बढ़ गयी। प्राप्त हुआ सुअवसर हाथ से नहीं जाने देना चाहिए यह निश्चित कर, सेनापति दिलेरखा से शिकार के निमित उन्होंने छुट्टी ली। छत्रसाल वेश बदलकर और घोड़े पर सवार होकर रायगढ़ की दिशा में तेजी से दौड़ने लगे। थोड़े ही दिनों में वे शिवाजी की राजधानी में प्रविष्ट हुए। द्वारपाल के द्वारा उसने शिवाजी की ओर संदेश भेजा कि एक नवयुवक आपसे मिलना चाहता है। शिवाजी का प्रत्युत्तर मिला कि, ''बहुत लंबा सफर करके आये हो इसलिए आज रात भर हमारे अतिथिगृह में विश्राम करो। कल सबेरे मिलेंगे।

छत्रसाल को आश्चर्य हुआ कि ''मैं बहुत लंबा सफर करके आया हूँ, यह शिवाजी को कैसे पता चला?''

शिवजी-छत्रसाल भेंट

दूसरे दिन प्रातःकाल सेवक ने सूचना दी कि शिवाजी महाराज आपकी राह देख रहे हैं। छत्रसाल उसी सेवक के साथ चल पड़े। शिवाजी के महल में पैर रखते ही महाराज ने कहा—''आइए कुमार छत्रसाल, आपका प्रवास, सुखपूर्वक हुआ न?''

शिवाजी के मुख से अपना नाम सुनते ही वह स्तंभित हुआ। लंबे सफर का पहला प्रश्न वैसे ही था कि दूसरा प्रश्न उसके सामने आ खड़ा हुआ। क्योंकि प्रवास पर निकलने के समय से ही 'मैं कौन और कहाँ का? कहाँ जा रहा हूँ, यह किसी से भी उसने नहीं कहा था। फिर शिवाजी को कैसे पता चला कि मैं बहुत दूर से सफर करके आ रहा हूँ और मेरा नाम छत्रसाल है?

दोनों की मुलाकात होते वे परस्पर आलिंगनबद्ध हुए। शिवाजी ने उसे पास के ही आसन पर बिठाया। आसन पर बैठते ही शिवाजी ने कहा- 'कुमार

छत्रसाल, तुम सचमुच वीर हो, साहसी हो और सहृदय नवयुवक हो। मार्ग से आते समय आपने एक छोटे बालक के प्राण बचाए। सभी गांववाले आप को भगवान ही मान रहे हैं।''

अब तो छत्रसाल से नहीं रहा गया। उसने विस्मित मुद्रा से पूछा- 'महाराज! क्या, आप जादू जानते हैं? यह सारी बातें आपको कैसे पता लगीं?'

शिवजी हँसकर बोले—''कुमार, मैं जादूगर नहीं हूँ। मेरे राज्य की व्यवस्था ही मैंने ऐसी की है कि हर दिशा की सब स्थिति मुझे अवगत होती है। नगर का वार्ताकार सब घटना इकट्ठा कर मुझे सुनाता है। आपने जिस दिन मेरी राज्य सीमा में प्रवेश किया तब से अभी तक की सब घटनाएँ मेरे पास आ पहुँची हैं।'' यह सुनकर छत्रसाल स्तंभित हुआ। उसने महाराज से कहा ''महाराज, जो आप कह रहे हैं वह सच है। आपकी राज्यव्यवस्था आश्चर्यजनक है।''

''इसमें कोई आश्चर्य नहीं, छत्रसाल!'' शिवाजी ने कहा,'' राज्य की सभी जनता को एक सूत्र से, एक विचार धारा से, एक ही भावना से भर देने से यह कार्य होता हैं और यह सब मेरे गुरूदेव समर्थ स्वामी रामदास की कृपा है।''

''वह कैसे?'' छत्रसाल ने पूछा।

शिवाजी उसका समाधान करते हुए बोले ''हमारे गुरूदेव रामदास जी प्रत्येक गाँव में घूमते हैं। उन्होंने ग्राम में हनुमान का एक मंदिर बनाया है। और वह मन्दिर ही सभी गाँव वालों का स्फूर्ति केन्द्र है।''

कई दिन इसी प्रकार की चर्चा करते हुए शिवाजी ने छत्रसाल को लोकसंग्रह की, संघटन कार्य की, भावनात्मक एकता की सुविस्तृत जानकारी दी। छत्रसाल बहुत प्रसन्न हुए। छत्रपति के विषय में बहुत आदर की भावना उसके हृदय में जम गई। उन्होंने कहा- 'महाराज, मुझे अब यही महसूस होता है कि, मैं यहीं रहूँ और आपकी सेवा करूँ। आपके पास रहकर ही मैं देश-धर्म और आपकी सेवा सुचारू रूप से कर सकूंगा। इसी मे मेरे जीवन की सार्थकता होगी। ''शिवाजी ने कहा-'' नहीं कुमार, आज समय का बहुत महत्व है। हम जो कार्य आज कर रहे हैं वह सब धर्म के लिए देश के

लिए ही है। और यह धर्मयुद्ध केवल एक ही स्थान पर नहीं राष्ट्र के हर कोने में फैल जाना चाहिए।

''बुंदेलखण्ड आपके नेतृत्व की बाट जोह रहा है। आपको वहीं जाना चाहिए। देशप्रेमी बुंदेलों को संगठित कर मुगलों का नाश करने की प्रेरणा-प्रोत्साहन उन्हें देना आवश्यक है। आप यह हमेशा के लिये समझ जाइए कि हम मराठी लोग हिन्दुत्व की रक्षा के लिए सदैव आपके साथ हैं।''

शिवाजी की स्नेहभरी वाणी सुनकर छत्रसाल का पूरा समाधान हुआ और वह छत्रपति की सम्मति से ही अपने बुंदेलखण्ड की ओर अग्रसर हुआ।

छत्रसाल ने छत्रपति शिवाजी से धर्मयुद्ध की तथा युद्धशैली की मानो दीक्षा ली और वह अपनी कर्मभूमि की ओर लौटा। वह अत्यधिक उत्साहित था। शिवाजी उसके राजनीतिक गुरू और मार्गदर्शक हो चुके थे। बुंदेलखंड की ओर आते समय मार्ग में वह अपने चचेरे भाई बलदाउ और रतनशाह से मिला। छत्रसाल ने इस स्वातंत्र्य युद्ध में सहायता करने की उन्हें प्रार्थना की। किन्तु उन दोनों ने कहा, ''असमर्थ हैं।''

चम्पतराय के निधन के पश्चात औरंगजेब का बुंदेलखंड की ओर का मार्ग खुला हुआ था। उसने बुंदेलों की श्रद्धा-केन्द्र ओरछा का मंदिर नष्ट करने ग्वालियर के सरदार-फिदाईखान को 1800 सैनिकों को साथ ले जाने की आज्ञा दी। फिदाईखान अपनी फौज लेकर मंदिर तोड़ने आ रहा है यह वार्ता प्राप्त होते ही बुंदेले नवयुवक संगठित रूप में उसका प्रतिकार करने सुसज्जित हुए। हर गाँव से बुंदेले नवयुवकों के जत्थे ग्वालियर की ओर आने लगे। उस समय उनका नेतृत्व धर्म अंगद नामक वीर कर रहा था। फिदाईखान को ऐसा लगा कि हमें युद्ध ही नहीं करना पड़ेगा। इसी कारण वह बहुत आराम से आ रहा था। परंतु उसे जब झाँसी से चौंतीस मील उत्तर में धूमघाट के पास बुंदेले नवयुवक सज्ज दिखाई दिये, तब उन्हें देखते ही वह अवाक् हो गया। बुंदेले नवयुवक पहले ही तैयार थे। खान की फौज देखते ही उन्होंने उस पर आक्रमण कर दिया। खान की फौज असावधान थी। वह मार पड़ते ही तितर-बितर हो गयी। खान भी, प्राण बचाकर भाग गया। उसी समय छत्रसाल अपने अल्प सैनिकों के साथ बुंदेलखंड आ पहुँचा।

योग्य समय योग्य वस्तु मिलने पर कार्य को विलम्ब क्यों? स्वातंत्र्य युद्ध का प्रारंभ हो गया। उस समय छत्रसाल इक्कीस वर्ष के थे।

स्वातंत्र्य-युद्ध का श्रीगणेश

वीर छत्रसाल बुंदेल खंड में आ पहुँचे हैं यह वार्ता बिजली के समान चारों ओर फैल गयी। नवयुवकों ने उन्हें घेर लिया। उन बुंदेले नवयुवकों से छत्रसाल की छोटी-सी सेना ही वन गयी। अब समय न गँवाते हुए वे सब कार्य में संलग्न हो गये। मुगलों की चौकियों पर और उनके कार्यालयों पर उन्होंने आक्रमण प्रारंभ कर दिया। उसमें उन्हें विजय भी मिलती गयी। अब धीरे-धीरे उन्होंने आस-पास का क्षेत्र अपने कब्जे में कर लिया था।

छत्रसाल की सेना में और कुछ नवयुवक शामिल हुए। अब उनका लक्ष्य धंधेरा बन गया। धंधेरों ने भी आक्रमण का प्रतिकार किया किन्तु वे मैदान छोड़कर किले में घुस पड़े। छत्रसाल ने किले को घेर लिया। अन्त में असहाय होकर धंधेरे छत्रसाल की शरण आए और उन्होने छत्रसाल के साथ मित्रता का वादा किया। मैत्री दृढ़ करने के लिए धंधेरे के प्रमुख कुँवरसेन ने-अपनी भतीजी दानकुँवर छत्रसाल के साथ ब्याह दी। अब धंधेरों की सेना से छत्रसाल ने मालवा प्रान्त के सिरोंज पर धावा बोलकर उस प्रदेश पर भी अधिकार कर लिया। वहाँ का जागीरदार अपनी गोंड-सेना के साथ छत्रसाल की सेना में शामिल हुआ।

धामोनी गाँव झाँसी से 100 मील दूर था। वह मुगलों का केन्द्र था। खालिक वहाँ का फौजदार था। छत्रसाल भी धामोनी का महत्व जानता था। पहले धावे में छत्रसाल को कुछ विशेष लाभ नहीं हुआ, इसलिए उसने फिर से जोरदार आक्रमण कर वह प्रदेश भी अपने अधीन कर लिया। इस युद्ध में उसे मुगलों की कई तोपें प्राप्त हुई। इसके पश्चात् नजदीक के ही सागर नगर पर आक्रमण कर उसने मुगलों को भगा दिया। उसके बाद बांस के जागीरदार केशवरावजी दांगी के साथ छत्रसाल का द्वंद्वयुद्ध हुआ। जागीरदार तो मारे गये, छत्रसाल भी जख्मी हुए। छत्रसाल ने दांगी की जागीरदारी केशवरावजी के पुत्र विक्रमजीत को देकर उसे भी अपनी सेना में मिला लिया।

मुगलदरबार में खलबली

धामोनी के फौजदार खालिक ने अपनी पराजय की सब घटना पत्र द्वारा औरंगजेब को लिख भेजी और फिर से जोरदार आक्रमण करने की माँग की। पत्र देखते ही औरंगजेब हतबुद्ध हो गया। किन्तु दक्षिण में आने-जाने का उसका मार्ग बुंदेलखंड से ही होने से, उसे हाथ से जाने देना योग्य नहीं होगा यह महससू कर उसने रूहुल्लाखां नामक सेनापति को धामोनी का फौजदार बनाकर भेज दिया। रूहुल्लाखां ने तुरन्त बुंदेलखंड में प्रवेश कर अपनी विशाल सेना इकट्ठी की। उस समय छत्रसाल सागर के नजदीक गढ़ाकोटा में था। छत्रसाल बहुत दूर है यह समझते ही खान ने रात में ही उस प्रदेश पर आक्रमण कर दिया। किन्तु देशभक्त बुंदेलों के सामने खान की सेना टिक न सकी। प्रातःकाल होते ही वह भाग गयी। अन्त में खान भी बची हुई सेना के साथ भाग निकला।

रूहुल्लाखां का फिर से हमला

खान की पराजय की वार्ता आगरा पहुँची। औरंगजेब आगबबूला हो गया। उसने खान को सजा दी और फिर से आक्रमण करने का आदेश किया। इस बार रूहुल्ला ने जमकर तैयारी की और उसने छत्रसाल पर हमला कर दिया।

परन्तु इस वक्त भी खान दुर्भागी ही रहा। उसी की तोप का गोला उसके ही बारूदीखाने पर जा पड़ा। इससे सारी सेना तितर-बितर होकर भाग ली। आखिर खान भी हाथ-पैर पटकते चला गया।

यह घटना औरंगजेब को पता चली तो वह चिंतामग्न हुआ। तुरन्त उसने अपने कुशल सेनापति तहव्वरखां को बुंदेलखंड का बन्दोवस्त करने भेज दिया। खान फौज लेकर बुंदेलखंड पर चढ़ गया। गुप्तचरों से छत्रसाल को पहले ही यह वार्ता ज्ञात हो चुकी थी। उसने भी अपनी युद्धनीति बदल दी। इस युद्ध में उसने छापामार पद्धति का उपयोग किया।

इससे तहव्वरखां को रास्ते में कहीं पर भी बुंदेलों की सेना दृष्टिगोचर न होने से उसने अपनी सेना को आगे बढ़ने का आदेश दिया। आगे पहाड़ी

प्रदेश था। सेना को एक साथ जाने में कठिनाई थी। छत्रसाल की युद्धनीति यहीं सफल हुई। छत्रसाल की सेना ने खान की सेना पर हमले किए। इससे खान की सेना त्रस्त हुई। न वह आगे बढ़ सकती थी न पीछे हट सकती थी। छत्रसाल की सेना ने खान की सेना की दुर्दशा कर दी। तहव्वरखां को वापस जाना पड़ा।

छत्रसाल पहले दिन से ही अभी तक सतत विजयी होता रहा। औरंगजेब की चिन्ता बढ़ती रही। यह तो स्वाभविक ही है। मुगल सैनिक वेतनभोगी थे। वे ध्येयनिष्ठ सैनिकों के सामने कैसे टिक सकेंगे? अभी तक की विजयों से छत्रसाल की प्रतिष्ठा बुंदेलखंड में चारों ओर बढ़ गयी। हर कोई उसकी प्रशंसा करते नहीं आघाता। वह सभी का विश्वासपात्र बन गया।

सभी उसके अनुयायी बने। इस कारण छत्रसाल का सैन्यबल बहुत बढ़ गया। इसका ही परिणाम यह रहा कि छत्रसाल के दोनों भाई रजनशाह और अंगद जो अभी तक छत्रसाल से दूर थे, उससे मिल गये।

सफलता से उत्साहित होकर छत्रसाल ने भोपाल के पास की मुगल छावनी पर अचानक धावा बोला और वह प्रदेश अपने अधीन कर लिया।

इसके पश्चात् छत्रसाल उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा। उस ओर औरंगजेब ने मुनव्वरखां की नियुक्ति की थी। तुमुलयुद्ध के बाद विजयश्री ने छत्रसाल को जयमाला पहनायी। मुगल सेना ग्वालियर की ओर भागने लगी। किन्तु बुंदेलों ने उनका पीछा किया।

अब तो औरंगजेब बहुत हड़बड़ाया। उसने फिर से तहव्वरखां को बहुत बड़ी फौज देकर छत्रसाल से युद्ध हेतु रवाना किया। खान की सेना चुपके-चुपके आगे बढ़ने लगी। खान के गुप्तचारों ने उसे वार्ता दी कि छत्रसाल की शादी एक हफ्ते बाद एक गाँव में होने वाली है। खान बहुत हर्षित था। उसने विवाह के समय ही हमला करने की ठान ली। योग्य समय देखकर आक्रमण किया। किन्तु बुंदेले इस समय जैसे शादी के मेहमान थे उसी प्रकार देश धर्म की रक्षा के लिए सैनिक भी थे। दूल्हा छत्रसाल खड्ग सँभाल कर आगे बढ़ा। वहीं घमासान युद्ध हुआ। बहुत से मुगल सैनिक मारे गये। तहव्वर खां ने फिर से एक बार छत्रसाल पर धावा बोला किन्तु अन्त में उसे भागना पड़ा।

उसके बाद छत्रसाल ने बुदेलखंड के पश्चिम की ओर नरवर पर हमला किया। मुगल सेना के पैर यहाँ भी उखड़ गये। छत्रसाल ने नरवर के पास से बहुत-सी धनराशि प्राप्त की जिससे छत्रसाल के पास अब धन की कमी बिल्कुल ही नहीं रही। सैन्य तो विपुल था ही। इससे उसने एक बहुत बड़ा साहस करने की ठान ली। उसे जानकारी मिली थी कि दक्षिण की ओर से मुगल शासक औरंगजेब की ओर नियमित रूप से खजाना भेजते हैं। कुछ हिंदू राजा भी मुगलों की धाक से अपनी कर- राशि नित्य भेजते रहते हैं। छत्रसाल ने वह खजाना यहीं रोकने की ठान ली। सब बुंदेले उस काम में लग गये। काम सफल हुआ। उन्हें अगणित धनराशि प्राप्त हुई। औरंगजेब की आवक बंद हो गई।

अब छत्रसाल की सैनिकी ताकत और धनशक्ति बहुत बढ़ गई। इसलिए उसने उत्तर की ओर काल्पी पर हमला करने का निश्चय किया। परन्तु बीच में ही अब्दुल सम दनाक (औरंगजेब के सेनापति) ने उसे रोका। छत्रसाल काल्पी की ओर न जा सका। तथापि बीच में ही मुगलों की बहुत सी संपत्ति लूटकर वह वापस लौटा।

लौटने के बाद उसने खैरागढ़ पर आक्रमण किया। वहाँ सेनापति अन्वरखां से लड़ाई कर उसे ससैन्य भगा दिया। परन्तु छत्रसाल के सैनिकों ने अन्वरखां को पकड़कर छत्रसाल के सामने खड़ा किया। खान ने अपने प्राणों की भीख माँगी तो छत्रसाल ने उसके सामने दो शर्तें रखीं। एक-फिर से कभी बुंदेलों से विरोध नहीं करूंगा। और दूसरी शर्त से दो लाख रुपये देना होगा। खान ने दोनों शर्तें मंजूर की।

इस समय छत्रसाल का राज्य उत्तर में ग्वालियर से एरच तक और दक्षिण में मालवा तक, पश्चिम में नरवर से होकर पूर्व में हमीरपुर तक फैला था। लगभग 20 हजार वर्ग मील क्षेत्र छत्रसाल के अधिकार में था। अब छत्रसाल के बारे में लोगों के मन में बहुत ही आदर भाव बढ़ गया। लोग छत्रसाल को ही अपना नेता मानने लगे।

स्वामी प्राणनाथ

निरंतर लड़ाई से यद्यपि छत्रसाल अब विश्राम की कामना कर रहा था, फिर

भी वह शान्त नहीं बैठा। एक दिन अकेला ही मृगया के लिए निकल पड़ा। मउ के पास ही घना जंगल था। उसका नैसर्गिक सौन्दर्य देखकर वह मुग्ध हो गया। जंगल में घूमते-घूमते उसे एक आश्रम दिखाई दिया। घोड़ा उस ओर मुड़कर चलने लगा। आश्रम में सत्संग होता उसने देखा। एक महापुरूष ग्रामीण जनता को धर्मोपदेश कर रहे थे। उन ग्रामीणों ने अपने नेता छत्रसाल को तुरन्त पहचान लिया। वे जोर से चिल्लाए ''ओहो ! छत्रसाल आ गये! छत्रसाल आ गये!'' उन महापुरूष के कानों पर ये शब्द जैसे ही आये, उनकी तंद्रा टूट गयी। तुरन्त उठकर उन्होंने उसका स्वागत किया। अपने पास आसन पर बिठा लिया। पूछा—''कुमार आप कहाँ से आ रहे हो?'' ''मृगया के लिए निकल पड़ा था, अब थक गया हूँ, प्यास लगी है। आश्रम दिखाई दिया, इसलिए इधर आ पहुँचा हूँ।'' छत्रसाल ने उत्तर दिया। वे थे स्वामी प्राणनाथ। काठियावाड के जामनगर में 1675 में एक क्षत्रिय कुल में इनका जन्म हुआ था। अपने गुरू-देवचन्द्रजी की इच्छानुसार वे धर्मप्रचार के लिए देश भ्रमण कर रहे थे। इस समय वे बुंदेलखंड में निवास कर रहे थे। देश भ्रमण में स्थान-स्थान पर मुगलों के अत्याचार उन्होंने देखे थे। औरंगजेब का मत परिवर्तन कर मुगलों के अत्याचार बन्द हों इसलिए उन्होंने बहुत कोशिश की। पश्चात् महाराजा जसवंतसिंह से तथा उदयपुर से राजसिंह से वे मिले। उन्हें भी अपने कर्तव्य की समझ दी। लेकिन सब व्यर्थ। उन्हें कहीं भी सफलता नहीं मिली।

दूसरे दिन दोनों की मुलाकात से छत्रसाल के कार्य को धर्म का अधिष्ठान प्राप्त हुआ। चाणक्य से चन्द्रगुप्त अथवा स्वामी रामदास से श्री शिवाजी की तरह स्वामी प्राणनथ से छत्रसाल को मार्गदर्शन हुआ।

स्वामीजी लोक भावना का आदर करने वाले थे, इसीलिए उन्होंने छत्रसाल का राज्यभिषेक करने का निश्चय किया। विजयादशमी का दिन निश्चित हुआ। स्वामी प्राणनाथ ने अपने हाथों से छत्रसाल को राजतिलक किया। सत्यसंकल्प का प्रतीक बीड़ा छत्रसाल को दिया गया। उनकी कमर पर तलवार कस दी और उन्हें आशीर्वाद दिया।

बहलोलखां

छत्रसाल ने स्वामीजी के निर्देश पर पन्ना पर धावा बोला। वहाँ की सारी संपत्ति छत्रसाल को प्राप्त हुई। स्वामी के उपदेश से आसपास के नवयुवक, वीर पुरूष छत्रसाल के सैन्य में आ मिले। उसने पन्ना को ही अपनी राजधानी बनाया। औरंगजेब भी छत्रसाल को समूल नष्ट करने निकला था। अब उसने सामूहिक रीति से आक्रमण करना तय किया। लेकिन छत्रसाल ने अपने बुद्धि चातुर्य से और युद्ध कौशल्य से उसे परास्त किया।

औरंगजेब के नाम संधिपत्र लिखकर अपना बचाव तो छत्रसाल ने कर लिया। लेकिन वह संधिपत्र धोखाधड़ी है यह औरंगजेब के ध्यान में न आने से संधिपत्र से लापरवाह रहे मुगलों के प्रदेशों पर हमला कर वे प्रदेश उसने जीत लिये। कर वसूल कर आगे बढ़ा। शेख अनवरखां से और धामोनी के फौजदार सदरूदीन से युद्ध कर उसने उन्हें बन्दी बनाया। उनसे भी कर लेकर आगे बढ़ते हुए कोटरा के फौजदार सरूयद लतीफ से कर वसूल कर उसे छोड़ दिया।

अब औरंगजेब ने एक कुशल और चालाक सरदार बहलोलखान को आक्रमण के लिए भेजा। बहलोलखान की बुद्धिमता और युद्ध नीति सर्वश्रुत थी। छत्रसाल, राजधानी पन्ना में नहीं है, यह ज्ञात होते ही उसने पन्ना पर आक्रमण किया पन्ना से आठ मील दूर स्थित राजगढ़ पर आक्रमण हुआ है यह वार्ता जैसे ही दूतों द्वारा छत्रसाल ने सुनी, वह यथाशीघ्र सेना लेकर राजगढ़ की ओर आया। किले में घिरे हुए बुंदेलों को वीर छत्रसाल आ पहुंचे हैं, यह पता चलते ही उन्होंने मुगल सेना पर अचानक धावा बोल दिया। बाहर से छत्रसाल की सेना थी ही। मुगल सैन्य दोनों ओर से पीसा गया। वह तितर-बितर होते ही बहलोलखान भागने लगा। किन्तु बुंदेलों ने पीछा कर उसे मार डाला।

औरंगजेब की चालाकी

निरंतर लड़ाई से छत्रसाल अपनी राज्य व्यवस्था में ध्यान न दे पाया था। बुंदेलखंड के आसपास का सब क्षेत्र अब उसके कब्जे में था। औरंगजेब

की भी मनःस्थिति अब ठीक नहीं हैं, इसका भी उसे पता चला था। इसलिए छत्रसाल ने अपनी राज्यव्यवस्था ठीक करने के लिए यही योग्य समय है ऐसा सोचकर औरंगजेब की ओर एक संधि प्रस्ताव फिर से भेज दिया।

इस समय औरंगजेब ने कुटिलता अपनाई। उसने छत्रसाल का संधि प्रस्ताव मान्य कर उसे दक्षिण की ओर जाने के लिए बाध्य कर लिया।

छत्रसाल को औरंगजेब की कुटिलता ध्यान न आयी वह भी बुंदेलखंड छोड़कर दक्षिण जाने निकला। इसी समय औरंगजेब ने अपने सरदारों को ससैन्य भेजकर धामोनी, गढ़ाकोटा दमोह आदि किले फिर से जीत लिये। छत्रसाल ने जो नया किला छतरपुर में बाँधा था, उस पर भी मुगलों ने कब्जा कर लिया। यह वार्ता छत्रसाल के कानों पर गुप्तचारों ने पहुँचायी। छत्रसाल वापस लौटा।

छत्रसाल की अनुपस्थिति से मुगल सैनिक आवारा बन गये थे। नेता के न होने से बुंदेलखंड भी हतबल-सा हो गया था। इसी का लाथ उठाकर शेर अफगान फौजदार मउ सहानिया प्रान्तों पर आक्रमण करने आगे बढ़ा। किन्तु मउ सहानिया के पास ही छत्रसाल की विशाल सेना देखकर वह हड़बड़ाने लगा। छत्रसाल वापस आये हैं, यह सुनकर बुंदेलों में फिर से जोश भरा। वे मुगलों पर टूट पड़े । शेर अफगान बन्दी बनाया गया। उससे जबरदस्त कर लेकर ही छत्रसाल ने उसे छोड़ दिया।

अफगान, शाहकुलीन आदि फौजदारों को भगाकर छत्रसाल ने बड़ी तत्परता से फिर से अपने किले वापिस लिये। मुगावली पर धावा बोलकर वह प्रदेश भी जीत लिया।

विदिशा और उज्जैन तक आगे बढ़ते हुए उसने अगणित संपति प्राप्त की। अपना कोष चौगुना कर लिया और इंदरखी (इटारसी) की ओर बढ़ा। वहाँ का जमींदार पहाड़सिंह अभी भी मुगलों का अनुयायी था किन्तु छत्रसाल को बढ़ते कदम देखकर वह उससे आकर मिला। छत्रसाल का आक्रमण चालू ही था। उसी में ही एक आक्रमण में पहाड़सिंह मारा गया। उसके दो लड़कों भगवतसिंह और देवीसिंह ने छत्रसाल को निष्ठापूर्वक मदद दी। भगवतसिंह ग्वालियर से बारह मील दूरी पर स्थित आंतरी के युद्ध में मारा गया।

मोहम्मदखां बंगश

औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगलों में सत्ता-संघर्ष शुरू हुआ था। उसके सब सरदार लुटेरे और डकैत बन गये थै। मोहम्मदखां भी एक लुटेरा था।

उसी भांति बहादुरशाह की मृत्यु के बाद उसके भी राज्य में जहांदरशाह और फर्रूसियर इन दोनों में संघर्ष शुरू हुआ। फर्रूसियर ने मोहम्मदखां से मदद ली और सत्ता प्राप्त की।

छत्रसाल को यह वार्ता प्राप्त होते ही उसने अपनी फौज भेजकर बंगश की छावनी पर हमला किया। काल्पी के पीर अलिखां और उसके लड़के को मार डाला। इससे बंगश चिढ़ गया। उसने 15 हजार सैनिकों के साथ यमुना नदी पार की।

बुंदेले सरदार और छत्रसाल के पुत्र-हिरदेशाह तथा जगत्पाल बंगश से युद्ध करने तैयार ही थे। उन दोनों भाईयों ने बंगश को पराजित किया और कर वसूल करके वापिस भेजा। एक विभाग का सेनापति उसका भाई हादी दादखान था। दूसरा विभाग अपने पुत्र कायमखां के आधीन किया और तीसरा विभाग उसने स्वयं सँभाला। अब बुंदेलखंड पर तीनों ओर से मुगल सैन्य आ पहुँचा। बुंदेले भी बड़ी तेजी से उन पर टूट पड़े। मुगल सेना नष्ट होती रही। फिर भी बंगश आगे बढ़ ही रहा था। इस समय छत्रसाल 80 वर्ष का था। उसे विश्राम की अत्यन्त आवश्यकता थी। परंतु संकट सिर पर था। इस अवस्था में भी उसने बंगश को रोका, आगे बढ़ने नहीं दिया।

उसी समय छत्रसाल ने वार्ता सुनी कि बंगश की सहायता के लिए और भी मुगल सेना आ रही हैं। यह भी वार्ता गुप्तचरों ने सुनाई कि 'मरहट्टों' ने अजमेर की लड़ाई में विजय पाई है। चिमाजी आप्पा उज्जैन में बैठे हैं। यह समाचार मिलते ही छत्रसाल को पुरानी याद हो आयी। छत्रपति शिवाजी ने वचन दिया था कि 'हिन्दुत्व की रक्षा के लिए हम मराठा आपकी सहायता करेंगे।''

छत्रसाल को विश्वास था कि 'मरहट्टे' वचन का पालन जरूर करेंगे। उसने भगवती विंध्यवासिनी का मनः पूर्वक स्मरण किया और बाजीराव पेशवा तथा चिमाजी की ओर दूतों के द्वारा संदेश भेजा।

जो बीबी गज-ग्राह पर, सो गति भई है आज।
बाजी राज बुंदेल की, राखो बाजी लाज॥

इस समय बाजीराव पेशवा देवगढ़ में थे। वहाँ दूत से संदेश पत्र प्राप्त होते ही उन्होंने भी चिमाजी आप्पा को मदद के लिए जाने का आदेश भेजा। स्वयं भी तुरन्त निकल पड़े।

बाजीराव अपनी विशाल विजयी सेना लेकर बुंदेलखंड में आ पहुँचे। छत्रसाल को संदेश मिलते ही उसने उनका स्वागत किया। बुंदेले और मराठा सेनाप्रमुखों की सभा में बंगश को पकड़ने का निश्चय भी पक्का हुआ।

दूसरे दिन बंगश ने देखा कि वे दो सैन्यों के बीच में फँसा है तो उसने अपने पुत्र कायमखां को ससैन्य मदद के लिए बुलावा भेजा। उसे आशा थी कि कायमखां जरूर आयेगा। परन्तु उसके मनोरथ विफल हुए। क्योंकि मराठा सैनिकों ने कायमखां को घेर लिया था। उसकी सेना धूल चाट रही थी। कायमखाँ वहाँ से भाग गया था। उसके 3000 घोड़े, हाथी और बहुत सी युद्ध सामग्री मराठों के हाथ लगी थी।

कायमखां पराजित होकर भाग गया है यह संदेश बंगश को मिलते ही उसकी हिम्मत पस्त हो गयी और उसने महाराज छत्रसाल के चरणों में शरण ली। अपने प्राणों की भीख माँग कर ''फिर से कभी भी मैं इस क्षेत्र पर आक्रमण नहीं करूँगा,'' ऐसी कसम खा ली।

छत्रसाल ने क्षत्रियोचित उदारता से उसे क्षमा प्रदान की। बंगश बुंदेलखंड छोड़कर चला गया। वह फिर से कभी वापस नहीं आया।

मराठा और बुंदेलों का अटूट नाता।

बुदेलखंड को महान संकट से बचाने का सारा श्रेय वीर बाजीराव पेशवा को ही था। इससे अब उनका संबंध एक परिवार जैसा बन गया। छत्रसाल ने बाजीराव को अपना तीसरा पुत्र मानकर अपने राज्य का तीसरा हिस्सा उसे दे दिया। उसमें काल्पी, कौंच, झाँसी और सागर प्रदेश समाविष्ट थे। छत्रसाल अब बहुत ही जराजर्जर हो चुका था। इस लड़ाई के बाद वह केवल ढ़ाई साल जीवित रहा।

उसके परिवार ने जब छत्रसाल की समाधि बाँधने का निश्चय किया।

उस समय बाजीराव पेशवा ने भी अपना हिस्सा पुत्र के नाते उसके लिए दिया, जिससे उनके घरेलू संबंध और भी मजबूत हो गये।

छत्रसाल के चरित्र के सम्बन्ध में एक घटना सर्वश्रुत है कि छत्रसाल की युवावस्था में उसके रूपसौन्दर्य के कारण एक रूपवती स्त्री ने उसके पराक्रम, कीर्ति आदि अनुभव कर उससे याचना की कि– ''महाराज, मैंने अपने को आपके चरणों पर अर्पित कर लिया है, मुझे आपसे आपके समान ही शूर-वीर पुत्र हो।''

छत्रसाल ने तुरन्त उत्तर दिया कि ''माँ! मैं तेरा ही पुत्र हूँ,'' कहकर उसके चरणों पर मस्तक टिका दिया।

छत्रसाल ने आजीवन उसे ''माता'' कहकर ही पुकारा और उसके पालन-पोषण की पूरी जिम्मेवारी लेकर उसके लिए एक महल बाँध दिया। वह आज भी पन्ना विभाग में ''बउ आजूं की हवेली'' नाम से प्रसिद्ध है। जागीरी में दी हुई सम्पत्ति भी उसके कुल में विद्यमान है। इस घटना से छत्रसाल का चारित्र बहुत निखर उठा था।

जिस भूषण कवि ने महाराज छत्रपति शिवाजी के विषय में 'शिव-बावनी' लिखकर स्तुति की उसी ने छत्रसाल के विषय में–'छत्रसाल-बावनी' लिखकर अपनी अटूट श्रद्धा प्रकट की है।

इसीलिए बुंदेलखंडवासी आज भी सवेरे उठते ही अन्य देवताओं के समान छत्रसाल का भी पुण्यस्मरण करते हैं–

''छत्रसाल महाबली। करियो भली भली॥''

हे महान् बलशाली छत्रसाल आप हमारा कल्याण करें।

आधार–भारत भारती, नागपुर द्वारा प्रकाशित और पद्मशेणै द्वारा लिखित (हिन्दी संस्करण) 'छत्रसाल' कथानक के आधार पर कथा का काव्य रूप–

अनुक्रम

महाबली वीर छत्रसाल : कथा वस्तु 11

विनयाञ्जली 31

प्रथमसर्ग : जन्म और बाल्यकाल 33

द्वितीय सर्ग : शत्रु के रक्त से देवी का अभिषेक 36

तृतीय सर्ग : पिता की मनोव्यथा 40

चतुर्थ सर्ग : माता पिता का दुखद अन्त 44

पंचम सर्ग : जय सिंह की सेवा में छत्रसाल 49

षष्टम सर्ग : छत्रपति शिवाजी से भेंट 51

सप्तम सर्ग : स्वाभिमाहन से तेजस्विता धारण की 56

अष्टम सर्ग : स्वातन्त्रमय युद्ध का श्रीगणेश 58

नवम सर्ग : धामोनी पर आक्रमण और
रूहल्ला खाँ का हमला 62

दशम सर्ग : मनुव्वर खाँ से टक्कर लेना 65

एकादश सर्ग : स्वामी प्राणनाथ से भेंट 72

द्वादश सर्ग : प्राण नाथ के आदेश से नयी व्यूह रचना 77

विनयाञ्जली

हमें निज पूर्वजों का स्मरण
देता प्रेरणा अद्भुत
कि उनकी जीवनी से भी
मिली संभावना अद्भुत

महापुरूषों के जीवन से
नया आकाश मिलता है
नये इतिहास के अध्ययन
का विश्वास मिलता है

ये मानव जाति के प्रति
प्रेरणा के स्रोत होते हैं
यह संस्कृति केन्द्र के
संस्कारमय उत्प्रोत होते हैं

नयी पीढ़ी को सौंपें
यह अमर इतिहास की थाती
यही आधार है, इस देश
के विश्वास की थाती

इसी सन्दर्भ में प्रस्तुत
कथा जलती मशालों की
कथा उन शक्ति पुत्रों की
अनूठे छत्रसालों की

कि जिनके स्मरण से ही
शक्ति का आधार मिलता है
नये उत्साह के विश्वास का
संस्कार मिलता है

नमन उसको कि जो
इस राष्ट्र मन्दिर का पुजारी है
कि जिसने प्राण देकर
आरती माँ की उतारी है

प्रथमसर्ग

जन्म और बाल्यकाल

झाँसी के चारों ओर बसी
बुन्देलखण्ड की धरती है
यह बुन्देलों की जन्मभूमि
सबका अभिवादन करती है

इस धरती का ही वीर पुरुष
था चम्पत राय सुभट मानी
सर्वत्र सुपरिचित ख्यातिलब्ध
था ध्येयनिष्ठ ज्ञानी-ध्यानी

उसने बलशाली वीरों का
दल, शक्तिवन्त तैयार किया
दुश्मन के सम्मुख डटा रहा
दृढतर अनन्त तैयार किया

उसकी भार्या थी **''लालकुँवर''**
सामर्थ्यवान अलबेली थी
जननी थी तीन बालकों की
सुन्दर थी नई नवेली थी

था ज्येष्ठ ''सार वाहन'' सुपूत
युद्धस्थल में बलिदान हुआ
दूसरा पुत्र ''अगंद'' अदम्य
दृढ़ सबल सुयोग्य महान हुआ

तीसरा पुत्र था छत्रसाल
जो वीरोचित वरदानी था
था भक्त भवानी का भावुक
उज्ज्वल भविष्य लासानी था

शुदि ज्येष्ठ तृतीया को संवत्-
सत्रह सौ छः में जन्म लिया
था शुक्रवार उस दिन पावन
जब वीर पुत्र ने जन्म लिया

वृद्धावस्था जर्जर शरीर
था चम्पत राय थका हारा
लड़ते-लड़ते मुगलों से ही
वह भूल गया था सुख सारा

कर सका न सुत की देखभाल
अन्तस में स्नेह सहेज लिया
उस छत्रसाल को मामा के
घर पर पढ़ने को भेज दिया

ननिहालों में ही पढ़ लिखकर
वीरोचित शिक्षा पूरी की
शास्त्रास्त्र निपुण उस बालक ने
निज ज्ञान पिपासा पूरी की

निज बाल्यकाल में ग्रन्थों की
सुन सुनकर कर वीर कथाओं को
संस्कारवान उस बालक ने
स्वीकारा सभी प्रथाओं को

यह धर्मशील भावना युक्त
हर तरह योग्य था, अनुपम था
बाल्यावस्था में ही तो वह
संकल्पवान था सक्षम था

द्वितीय सर्ग

शत्रु के रक्त से देवी का अभिषेक

माँ विंध्यवासिनी को क्षत्रिय
आराध्य भवानी कहते हैं
बुन्दलों के हृदय-स्थल भी
बस यही कहानी कहते हैं

पूजा का अवसर था उस दिन
मन्दिर में भव्य महोत्सव था
वह छत्रसाल पूजन के हित
जा रहा, शान्त मन अभिनव था

था वीर वेश, वह बाल वीर
छोटा-सा खड़ग कमर में था
कर में फूलों की डलिया थी
माँ की पूजा को तत्पर था

सहसा अश्वारोही सवार
देखा वीरों की टोली ने
माँ विन्ध्यवासिनी के विरुद्ध
कर दिया अचंभित बोली ने

बोला अश्वारोही, बच्चो
मन्दिर का रस्ता बतलाओ
किस जगह हो रहा है जलसा?
जल्दी से किस्सा समझाओ

बच्चों ने पूछ लिया बढ़कर
क्या पूजा करने आये हो?
अपने जीवन के पापों से
क्या पार उतरने आये हो?

अश्वारोही उद्धत स्वर में
गाली देकर बोला ऐसे
अपमानित करने की खातिर
बोलते यवन, पहले जैसे

पूजा किस की, कैसी पूजा
हम मूर्ति तोड़ने आये हैं
मन्दिर को ध्वस्त करेंगे हम
संबंध...जोड़ने आये हैं
(भद्दी गाली देकर)

अपमान भरे शब्दों को सुन
वह छत्रसाल तमतमा गया
सक्रोध गर्जना करता वह
बहका-बहका अचकचा गया

बोला वह अश्वारोही से
हम, खेल बहुत से खेले हैं
हम क्षत्रिय कुल के बालक हैं
हम वीर सुभट बुन्देले हैं

जो विन्ध्यवासिनी माता को
कुत्सित-सी गाली देता है
बदले में क्षत्रिय बुन्देला
अविलम्ब प्राण हर लेता है

यह कहते ही उस बालक ने
कर में ले खड़ग भवानी का
अश्वारोही पर वार किया
सिर काट दिया अभिमानी का

गिर गया धरा पर घुड़सवार
कट गया शीष जो धड़ पर था
अनुसरण किया सब वीरों ने
जो वार किया वह जड़ पर था

सब बाल क्षत्रियों ने अपनी
तलवारों से जब वार किये
सब घुड़सवार योद्धाओं के
सिर धड़ से सभी उतार दिये

फिर दौड़ पड़े मन्दिर दिशि में
यह समाचार जा बतलाया
उस छत्रसाल ने है कैसे
अश्वारोही को लुढ़काया

फूलों की डलिया वामहस्त
दक्षिण कर में तलवार लिये
विजयी मुद्रा में छत्रसाल
आ रहा रूप साकार लिये

देखा जब रक्तरँगी असि को
सब धन्य-धन्य स्वर बोल उठे
जयकारों के भीषण स्वर सुन
थे दिग्-दिगन्त सब डोल उठे

निज राष्ट्र धर्म की रक्षा का
नेतृत्व सभी ने पहचाना
यह छत्रसाल बुन्देला है
अब नहीं रहा यह अनजाना

इस घटना से बुन्देल खण्ड में
नई स्फूर्ति का उदय हुआ
चम्पत के नये वीर जैसी
इक नई मूर्ति का उदय हुआ

तृतीय सर्ग

पिता की मनोव्यथा

निरन्तर युद्ध से जर्जर
हुआ था वृद्ध चम्पतराय
शिथिल तन और व्याकुल मन
पराक्रमसिद्ध चम्पतराय

प्रफुल्लित और आनन्दित
व्यवस्थित चित्त चम्पतराय
दृढ़व्रती और विश्वासी
समादृत वित्त चम्पतराय

बुलाकर पुत्र को, बोले
हुए तुम गर्व जननी के
हो तुम विश्वास क्षत्रिय का
बने तुम पर्व जननी के

मुझे चिन्ता है जननी की
है चिन्ता राष्ट्र की मुझको
नियति और नीति की चिन्ता
है चिन्ता मातृ की मुझको

कि मैंने व्रत लिया था
धर्म का रक्षण करुंगा मैं
बुन्देले क्षत्रियों की आन
संवर्धन करुंगा मैं

इसी कारण मैं सेवा में
रहा हूँ ''ओरछाओं'' की
कि पर्वत सिंह जैसे (पहाड़ सिंह)
क्षुद्र मन के बादशाहों की

वे दोनों मुगलशाहों के
ही खिदमतगार रहते हैं
कि प्रतिपल धर्म के विपरीत
वे तैयार रहते हैं

मुझे वे हर तरह से अद्यतन
हर दम सताते हैं
निरन्तर कर रहे षडयन्त्र
ये अनुचर बताते हैं

इधर अब तो मुझे दोनों
की नीयत में ही शंका है
वे धोखे से मुझे मारें
बजा करता यह डंका है

मुझे ये दुष्ट धोखे से
कभी भी मार सकते हैं
भरोसा दे के वे मुझ को
स्वयं को तार सकते हैं

अतः हे पुत्र मेरे लाडले
तुम पर भरोसा है
यह बीड़ा तुम उठाओ
जो (माँ) भवानी ने परोसा है

तनिक ठिठका, उठा तनकर
वह बोला वीर बुन्देला
पिता जी आप हों निश्चन्त
अब तक मैं बहुत खेला

मुझे इस मातृ भू के मान की
सौगन्ध कहती है
कि रक्षा का मेरा कर्त्तव्य
यह अनुबन्ध कहती है

मेरे अग्रज ''सारवाहन''
की हत्या के जो दोषी हैं
वे हत्यारे जो जन-जन को
सताने के भी दोषी हैं

मैं उन के उन सभी पापों
का बदला ले के आऊंगा
कि मेरे धर्म के दुश्मन
से बदला ले के आऊँगा

यह मेरा व्रत है जीवन का
यह दृढ़ निश्चय है बालक का
यह आश्वासन पिता तुम को
यही आशय है बालक का

सुनी जब पुत्र की वाणी
कि चम्पतराय पुलकित था
छलकते नेत्र थे अविरल
वह गद गद था, वह हर्षित था

था उसका कण्ठ भी अवरूद्ध
वाणी में भी कम्पन था
मगर था गर्व से अभिभूत
खुशी से रक्त आनन था

खड़े होकर धरा निज हाथ
अपने पुत्र के शिर पर
कहा आशीष देता है
पिता का यह हृदय आतुर

कि तुम बुन्देलखंडी
संगठन का ध्वज उठाओगे
तुम्ही माता भवानी के
सुखद आशीष पाओगे

उठा लो खडग अपने हाथ
पहनो केसरी बाना
तुम्हें अब जा के दक्षिण में
शिवाजी से है वर पाना

मिला आशीष माँ का
चल पड़ा वह वीर दक्षिण को
जहाँ पर छत्रपति हैं देखते
''नरसिंह'' के प्रण को

चतुर्थ सर्ग

माता पिता का दुखद अन्त

चम्पतराय जानते थे सब
मुगलों के षडयंत्रों को
इसीलिये वे जपते थे अब
अरि के मारक मन्त्रों को

वे अपनी भार्या को लेकर
थे घर से बाहर निकल पड़े
उस क्षेत्र मालवा के भीतर
छिपकर वे सत्वर निकल पड़े

मित्र ''इन्द्रमणि'' ग्राम धँधेरा
में निज घर में रहता था
वो उनको अपने अग्रज की
संज्ञा देकर यह कहता था

कभी जरूरत पड़े अगर तो
मेरे घर पर आ जाना
मेरे घर को अपना समझो
स्नेह सुधा बरसा जाना

लालकुँवर भार्या को लेकर
चम्पत घर से निकल पड़े
''अंगद'' भी था साथ, चार
सहयोगी भी संग विकल बड़े

मित्र इन्द्रमणि के घर जाते
लेकिन वे बीमार हुए
ज्वर से पीड़ित इस प्रवास में
थे बिलकुल लाचार हुए

मुगल सैनिकों की गतिविधियों
से परिचित थे चम्पतराय
षडयन्त्री चालों के कारण
अति प्रतिहत थे चम्पतराय

उन्हें यह भय था मुगल सैन्य ही
उनकी हत्या कर सकता है
कभी किसी क्षण भी अवसर पा
प्राणों को हर सकता है

इसीलिये वे निज भार्या संग
गुप्त स्थान के लिये चले
अगंद सुत और कुछ अनुचर ले
स्वाभिमान हित लिये चले

मित्र इन्द्रमणि ग्राम **'सहोरा'**
में निवास कर रहता था
चम्पतराय उसे भाई सम
अक्सर कहता रहता था

किन्तु मार्ग में चलते चलते
चम्पत थे बीमार हुए
ज्वर से पीड़ित कठिन दर्द से
चलने को लाचार हुए

अश्वारोहण छोड़ खाट पर
लेकर उसे चले थे सब
कुछ अनुचर थे और पुत्र था
काँधों पर ले चले थे सब

मित्र **इन्द्रमणि** दैव योग से
युद्ध क्षेत्र था गया हुआ
भूप ओरछा और **सुजान सिंह**
उसके पीछे पड़ा हुआ

साहिब राय एक सहयोगी
इन्द्रमणि की रक्षा में
थे सन्नद्ध सदैव युद्ध में
उस की गहन सुरक्षा में

नृप **सुजान सिंह** ने **साहिब** को
था इतना भयभीत किया
इसके कारण छोड़ मित्रता
था उसके विपरीत किया

ज्वर पीड़ित चम्पत से उसने
विश्वासों का घात किया
इसीलिये मौका पाते ही
छिपकर था आघात किया

लालकुँवर ने हतप्रभ होकर
कमर कसी, तलवार उठी
अरि पर टूट पड़ी क्षत्राणी
रक्षाहित हुँकार उठी

किन्तु शत्रु के प्रबलवार से
आहत चम्पत घबराया
खुद अपने ही खडग वार से
अपना सिर था कटवाया

देखा पति को सम्मुख मरते
क्षत्राणी अचकचा गई
अपनी असि से स्वयं वार कर
शुभ्र ज्योति में समा गई

और इस तरह छत्रसाल के
मात पिता के प्राण गये
जीवन यात्रा खत्म हो गई
धरती अम्बर जान गए

मातृभूमि के लिये इस तरह
चम्पत का बलिदान हुआ
बुन्देलों की बलिदानी का
था ऐसा अवसान हुआ

छत्रसाल, अंगद ने आकर
था अन्तिम संस्कार किया
और शत्रु से बदला लेने
का था प्रबल विचार किया

मामा के घर गया बुन्देला
मित्र मण्डली गठित हुई
युद्धकला की शिक्षा के हित
वीर भूमि संगठित हुई

और इस तरह छत्रसाल के
नवप्रभात का उदय हुआ
संघर्षों के लिये समर में
नवप्रपात का उदय हुआ

पंचम सर्ग

जय सिंह की सेवा में छत्रसाल

षोडष वर्षी छत्रसाल की
दक्षिण की तैयारी थी
वीर शिवा जी से मिलने की
उत्कण्ठा अति भारी थी

तभी मिला यह समाचार
औरंगजेबी षड्यत्रों का
कैसे पकड़े वीर शिवा को
इसी तरह के तन्त्रों का

राजा जयसिंह औरंगजेबी
आज्ञा के अधिकारी बन
छत्रपति को चले पकड़ने
शायद कुशल शिकारी बन

छत्रसाल ने सुनी खबर यह
दक्षिण को प्रस्थान किया
जयसिंह से मिलने की खातिर
शुरू नया अभियान किया

अग्रज अंगद सहित गये वे
जयसिंह के दरबार में
अपना परिचय दिया
पिता का नाम कहा सत्कार में

जयसिंह ने तब उन दोनों को
निज सेना में स्थान दिया
चम्पत के पुत्रों को बढ़कर
मनचाहा सम्मान दिया

षष्टम सर्ग

छत्रपति शिवाजी से भेंट

वीर छत्रपति शिवा मुक्त हो
पहुँच गये रजधानी में
छत्रसाल की इच्छा थी
हम पहुँचेगे अगवानी में

वेश बदलकर छत्रसाल तब
चले रायगढ़ की दिशि में
अश्वारोही छद्म वेश धर
पहुँचा था सत्वर निशि में

दीर्घ काल के इस प्रवास में
पहुँचे थे रजधानी में
द्वारपाल को दिया सन्देसा
खड़ा था जो अगवानी में

द्वारपाल ने वीर शिवा को
जाकर यह सन्देश दिया
वीर एक मिलने को आतुर
परिचय उन्हें विशेष दिया

वीर छत्रपति ने कहलाया
आप अभी विश्राम करें
थक कर अभी पधारें हैं
इसलिये अभी आराम करें

प्रातःकाल भेंट होगी ही
कहा वीरवर स्वागत है
कठिन सफर में श्रान्त आपका
मेरे घर पर स्वागत है

सुबह सवेरे द्वारपाल ने
आ दरवाजा खटकाया
और शिवाजी का सन्देशा
छत्रसाल तक भिजवाया

कहा आप को महाराज ने
आदर से बुलवाया है
और कहा है, प्रियवर आयें
सुख का सूरज आया है

छत्रसाल सेवक के पीछे
चले शिष्ट व्यवहार लिये
वीर शिवा के लिये हृदय में
आदरमय उपहार लिये

महाराज ने कहा, वीरवर
यात्रा सुख से पूर्ण हुई
मिली थकन से शान्ति
भावना मिलने की परिपूर्ण हुई

छत्रसाल ने वीर शिवा के
मुख से अपना नाम सुना
स्तंभित होकर लगे सोचने
मधुर वचन अविराम सुना

मन ही मन वे सोच रहे थे
कैसे मुझ को पहचाना
मेरा नाम जानते हैं ये
मैं समझा था अनजाना

स्वयं छत्रपति ने अपने ही
निकट उन्हें था स्थान दिया
कुशल क्षेम पूछी आदर से
और अमित सम्मान दिया

और कहा हे छत्रसाल तुम
वीर बहुत अलबेले हो
छत्रिय हो तुम वीर साहसी
अद्भुत सुभट बुन्देले हो

सुनी आप की कीर्ति पूर्व में
लगन आप की पहचानी
बलशाली व्यक्तित्व आपका
शक्ति नहीं है अनजानी

विन्ध्यवासिनी माता के भी
सच्चे भक्त पुजारी तुम
माँ की रक्षा करने के भी
हो सच्चे अधिकारी तुम

बहुत बड़ा है हृदय आपका
राष्ट्रभक्ति से पूर्ण सदा
इसके लिये समर्पित
कर सकते हैं जीवन पूर्ण सदा

इतना सुनकर छत्रसाल भी
श्रद्धा से अभिभूत हुआ
ज्ञानवान हैं स्वयं छत्रपति
मैं आदर पा पूत हुआ

अगर मिले आशीष आपका
मैं चरणों में रह लूँगा
और राष्ट्र के लिये समर्पण
के भावों में बह लूँगा

देखी राज्य व्यवस्था मैंने
देखा है अपनत्व नया
प्राप्त किया पितृत्व अनूठा
पाया आज ममत्व नया

एक सूत्र में बँधी हुई हैं
सारी राज्य व्यवस्थाएं
सुखी प्रजा के मन में गुँफित
हैं असंख्य आकांक्षाएं

कहा छत्रपति ने सविनय तब
यह समर्थ गुरूदेव कृपा
उनकी परम कृपा के कारण
करते हैं सब देव कृपा

राज्य व्यवस्था में उनका ही
है अद्भुत सहयोग सदा
रामदास गुरूदेव कर रहे
प्रतिपल नये प्रयोग सदा

ग्राम ग्राम में अंजनीसुत के
मन्दिर हैं निर्माण किये
ये श्रद्धा के केन्द्र, यहीं से
जन-जन के आह्वान किये

सप्तम सर्ग

स्वाभिमाहन से तेजस्विता धारण की

और इसी तरह वीर शिवा से
हुई मन्त्रणा प्रतिपल की
लोक संगठन और संकलन
कार्यप्रणाली छल, बल की

विस्तृत हुई समीक्षा जागा
छत्रसाल के उर में प्यार
आदर की भावना प्रबलतम
लेने लगी नये आकार

कहा शिवा ने छत्रसाल से
सुनो वीरवर देकर ध्यान
जाओ तुम बुंदेलखण्ड में
जहाँ तुम्हारा अद्भुत मान

वही तुम्हारी पुण्य भूमि है
पुण्य प्रसू वह धरा महान
जाओ उसके लिये समर्पित
करो हृदय से तन, मन, प्राण

छत्रसाल सुन वीर शिवा की
ओजपूर्ण उस वाणी को
जाग उठा ज्यों चिर निद्रा से
सुन कविता कल्याणी को

धर्म युद्ध की दीक्षा लेकर
कर्मभूमि को लौट गया
राजनीति के गुरूवर के हित
पुण्य भूमि को लौट गया

जाते समय मार्ग में उसको
मिले चचेरे भ्राता थे
'बलदाउ' और **'रतन शाह जी'**
अतिशय शक्ति प्रदाता थे

छत्रसाल ने उन्हें निहारा
सविनय उन्हें प्रणाम किया
स्वतन्त्रता के धर्म युद्ध में
ले आने का काम किया

बुन्देले ने अनुनय कर के
माँग लिया उनसे सहयोग
स्वतन्त्रता के लिये यह उसका
आमन्त्रण था नया प्रयोग

किन्तु उन्होंने कब स्वीकारा
छत्रसाल का आमन्त्रण
कहा कि हम असमर्थ हैं भैया
क्षमा करें हमको श्रीमन्

अष्टम सर्ग

स्वातन्त्रमय युद्ध का श्रीगणेश

बुन्देलखण्ड की श्रद्धा का
था केन्द्र ओरछा का मन्दिर
औरंगजेब की नजरों में
था खटक रहा देवी का घर

औरंगजेब की आज्ञा से
सरदार **'फिदाई खान'** चला
जाकर ध्वस्त करेंगे मन्दिर
ठान **फिदाई खान** चला

जैसे ही पाया समाचार
क्षत्रिय बुन्देले वीरों ने
प्रतिकार चुकाने की खातिर
थी कमर कसी रणधीरो ने

नवयुवक बुन्देलों के जत्थे
चल पड़े ग्वालियर के पथ पर
नेतृत्व कर रहा था **'धर्मू'**
सब खड़े ग्वालियर के पथ पर

संगठन शक्ति तैयार खड़ी
है कौन **'फिदाई खान'** कहो
हो सावधान क्षत्रिय वीरो
अब मौन **'फिदाई खान'** अहो!

सहसा बुन्देले वीरों ने
मुगलों पर यूँ धावा बोला
अचकचा गया था खान तभी
उसका तो साहस ही डोला

झाँसी के निकट अवस्थित था
उत्तर में धूमीधार क्षेत्र
उस जगह खड़े थे बुन्देले
सन्नद्धवीर रक्ताभ नेत्र

जैसे ही मुगलों की सेना
उत्तर की ओर निकट पहुँची
आक्रमण हुआ बुन्देलों का
घिर गई विवाद विकट पहुँची

अनपेक्षित हमले से आया
तूफान फिदाईखानों में
भागो भागो का शोर हुआ
अतिघोर फिदाईखानों में

बस इन्हीं क्षणों में छत्रसाल
भी पहुँच गया मैदानों में
स्वातन्त्र्य समर में कूद पड़ा
भर दिया जोश अरमानों में

बिजली-सी कड़की दुश्मन पर
चहुँओर घिर गया घबराया
उस छत्रसाल के हमलों से
मुगलों की टूट गई काया

असहाय **'धंधेरे'** छत्रसाल के
शरणागत बन खड़े हुए
मैत्री के लिये निवेदन कर
करबद्ध विनय से बड़े हुए

फिर **'कुँवरसेन'** सम्मुख आया
मुखिया था वीर धंधेरों का
अपने भाई की पुत्री से
सम्बन्ध करें यदि फेरों का

तब दान कुँवर से छत्रसाल
ने आखिर ब्याह रचाया था
उस तरह धंधेरों ने सहर्ष
सच्चा सम्बन्ध बनाया था

उनसे मिलकर बुन्देलों को
संगठित समर्पित शक्ति मिली
और छत्रसाल से दान कुंवर को
वैवाहिक अनुरक्ति मिली

फिर क्या था छत्रसाल ने भी
अवसर का लाभ उठाया था
चहुँओर मुगल सेनाओं से
लड़ने का लक्ष बनाया था

हर ओर विजय का सिंहनाद
थे गूँज रहे जय के नारे
हर हर बम बम जय महाकाल
थे बोल रहे सैनिक सारे

मन्दिर की रक्षा हुई और
उत्साह भर गया वीरों में
'धंधेरे' दुर्ग जीत कर भी
था जोश अभी रणधीरों में

मैदान छोड़कर भाग खड़े
सब सैन्य फिदाईखानों के
सब ओर छत्रसाली ध्वज थे
हर कोने में मैदानों के

नवम सर्ग

धामोनी पर आक्रमण और रूहल्ला खाँ का हमला

धामोनी ग्राम झाँसी के निकट था
वह मुगलों का ही गढ़ था अति विकट था
था **'खालिक'** क्षेत्र का सरदार उसका
बहुत ही क्रूर था व्यवहार उसका

धामोनी की महत्ता थी अपरिमित
सभी थे जानते उसका ही अभिमत
हुआ उस पर जो बुन्देलों का हमला
हतोत्साहित हुआ था सारा अमला

पुनः अब छत्रसाली आक्रमण से
मुगल सेना के होते निष्क्रमण से
गरजती रह गयी मुगलों की तोपें
चलो फिर से नये बिरवे को रोपें

भयानक आक्रमण यह छत्रसाली
थी **'केशवरा'** ने भी मुक्ति पा ली
फिर केशव-पुत्र **'विक्रम'** को भी जीता
कि पूरा क्षेत्र था मुगलों से रीता

मुगल दरबार में भी खलबली थी
कि **खालिक** की जो पत्रावलि मिली थी
था औरंगजेब हतप्रभ और अचंभित
रूहल्लाखां को कर के फिर समाहित

गढ़ा कोटा में थी संकट की वेला
जहाँ पर वीर क्षत्रिय था अकेला
'रूहल्ला' ने किया निशि में ही हमला
मगर तैयार था वीरों का अमला

सुबह होते ही भागा खान ऐसे
कि सूरज देख भागे तिमिर जैसे
पराजय सुनके औरंगजेब बोला
यह किसने है मेरी ताकत को तोला

पुनः आदेश पाकर खान आया
बुन्देलों ने उसे फिर से भगाया
कि पीछे छोड़ भागे, तोपखाना
हुई थी फौज फिर उलटी रवाना

पहाड़ी रास्तों से फौज का जाना कठिन था
बिना इसके फतह पाना कठिन था
ले छापामार हमलों का सहारा
इस नई नीति से **'तहव्वर'** भी हारा

गुप्तचरों ने छत्रसाल को बतलाया
तहव्वर खाँ भी सेना लिये चला आया
बुन्देलों ने युद्ध-रीति को बदल दिया
छापामारी कूटनीति पर अमल किया

तहव्वर खाँ की सेना असमंजस में थी
छापामारी युद्ध कला से विस्मृत थी
छत्रसाल की सैन्यशक्ति बढ़ती जाती
घोर पराजय मुगलों पर चढ़ती जाती

उत्तर दिशि में चलीं छत्रसाली फौजें
चलीं इस तरह जैसे सागर की मौजें
तुमुल इस तरह जैसे सागर के सेनानी
विजय पराजय की घड़ियाँ किसने जानी

दशम सर्ग

मनुव्वर खाँ से टक्कर लेना

यहाँ मुन्नव्वर खाँ से टक्कर लेनी है
घोर युद्ध कर उसे पराजय देनी है
यही सोचकर विन्ध्यवासिनी के बेटे
शीष नवाकर साष्टांग ऐसे लेटे

मात भवानी हमें विजय का वर देना
दुश्मन को हर तरह नकारा कर देना
छत्रसाल की सेना बढ़ती चली गई
पर्वत, और पठारों चढ़ती चली गई

मुगल सैन्य के सभी हौसले टूट गये
तहव्वर खाँ के सुनो, पसीने छूट गये
सबने देखा भाग रही उन फौजों को
मजा आ राह था समुद्र की मौजों को

चिन्तित औरंगजेब, उसे हैरानी थी
बुन्देलों ने कैसी लिखी कहानी थी
पुनः **तहव्वुर खाँ** को उसने कहलाया
हुक्म बादशाही था उसको भिजवाया

अगर हार कर लौटे शीश कटाओगे
विजयी होने पर ही ओहदा पाओगे
चुपके-चुपके चले खान के सेनानी
उनके पास तोपखाना था लासानी

गुप्तचरों से तहव्वर खाँ ने जाना था
छत्रसाल को कल को ब्याह रचाना था
वैवाहिक स्थल पर ही हमला बोलेंगे
अनायास ही सबकी ताकत तोलेंगे

चहल-पहल थी राजमहल के आँगन में
मंडप सजा हुआ था विस्तृत प्राँगण में
मंगल गीतों में गुँजित था राजमहल
बहुत प्रफुल्लित आह्लादित था राजमहल

वस्त्रालंकृत स्वर्ण विभूषित महिलाएँ
सुघड़ सुकोमल भाल अलंकृत महिलाएँ
यत्र-तत्र सर्वत्र सुपुष्पित धर आँगन
अक्षत चन्दन धूम सुगन्धित घर आँगन

घूँघट में सौन्दर्य झाँकता था ऐसे
मेधाच्छित चन्द्रतारिका हो जैसे
सजे सुवासित संस्कारों की वेदी पर
वैवाहिक आयोजन की उस वेदी पर

पूजन की हर वस्तु स्वयं में शोभित थी
वेदी वन्दनवार सुपुष्प अलंकृत थी
और चतुर्दिक आसन चार विराजित थे
चन्दन की समिधा के काष्ठ सुशोभित थे

हवनकुंड था मंडप की उत्तर दिशि में
घटस्थापना होनी थी पूरब दिशि में
आम्रपत्र थे शोभित कुंभ पयोमुख पर
वर्ण-वर्ण के पुष्प सुशोभित प्रतिरुख पर
वैवाहिक उपहारों की क्या बात करें
वीरोचित सत्कारों की क्या बात करें

पूरा वातावरण बहुत उत्साहित था
अतिशय था उल्लास, सहर्ष समाहित था
मंगल गीतों को गाती थी महिलाएँ
मधुर स्वरों को गुँजाती थी महिलाएँ

और द्वार पर बजती मधुरिम शहनाई
शहनाई की ध्वनियों में थी गहराई
स्वर-लहरी में एक अजीब प्रकंपन था
वीर बाँकुरों के हित यह उद्‌बोधन था

उद्‌बोधन था जागरूक करने वाला
वीरोचित स्वर था जो भय हरने वाला
इसीलिए तो केसरिया गणवेश सजा
बुन्देलों का गरिमामय आवेश सजा

बुंदेलों की चहल-पहल भी जारी थी
भीतर ही भीतर सारी तैयारी थी
'तहव्वर खाँ' के हमले का अन्देशा था
जागरूक रहने का यही सन्देशा था

उधर सजग थी बुन्देलों की क्षत्राणी
क्षत्राणी भी सुधड़ सलौनी मस्तानी
हर विपदा से लड़ने को तैयार खड़ी
खड़ग कमर में बाँधे थी, हर नार खड़ी

ये नारी बुन्देल खण्ड की मानी थी
झाँसी के उस वीर वेश में रानी थी
तलवारों से हर नारी थी सजी हुई
शृंगारों से हर नारी थी सजी हुई

अधरों पर मुस्कान, हृदय में धड़कन थी
नयनों से आह्वान, अजब ही सिहरन थी
संकेतों में इच्छा थी बलिदानी की
मूरत थी मन्दिर की शक्ति भवानी की

दुलहिन का शृंगार कर रही थीं सखियाँ
यौवन का सत्कार कर रही थीं सखियाँ
दूल्हा बनकर छत्रसाल जब आयेंगे
देख नयी दुलहिन को वे मुस्कायेंगे

गुपचुप छुपछुप बोल रहा थी सब सखियाँ
कुछ मिसरी-सी घोल रही थी सब सखियाँ
उनकी बातों में भी कुछ कौतूहल था
कौतूहल था या कोई कोलाहल था

क्योंकि अजब सी खामोशी थी आलम में
अनचाही-सी सरगोशी-थी आलम में
गुमसुम था माहौल अजब सन्नाटा था
वातावरणों में भी ज्वार था, भाटा था

और अचानक तलवारों की ध्वनि गूँजी
मुखरित अश्व सवारों की थी ध्वनि गूँजी
बाहर, का मौसम जितना जोशीला था
भीतर का हर समाचार रंगीला था

पंडित जी के श्रीमुख वेद मन्त्र बोले
वेद ध्वनि थी गूँज रही हौले-हौले
मंगल गीतों के स्वर में जो कम्पन था
संभावित लग रहा अजीब प्रभंजन था

'तहव्वर खाँ' की सेना जो चढ़ आई थी
बुन्देलों के सुभटों बीच लड़ाई थी
मारो काटो भागो की आवाज़ें थी
गिरने, पड़ने, रोने की आवाज़ें थी

बुन्देले तैयार खड़े थे लड़ने को
'तहव्वर खाँ' के लश्कर पर ही चढ़ने को
और इस तरह हमला था नाकाम किया
बड़े-बड़े युद्धों का असमय काम तमाम किया

अर्धरात्रि में था ऐसा संग्राम हुआ
पूछो मत, था यह कैसा संग्राम हुआ
पैदल से पैदल भिड़ रहा सिपाही था
अश्वारोही से उसका हमराही था

तलवारों की खनन खनन के स्वर गूँजे
तकरारों की तनन तनन के स्वर गूँजे
अश्व चढ़े उन पर, जौ सैनिक गिरते थे
युद्ध क्षेत्र में काले बादल धिरते थे

किन्तु इधर भी तो पूरी तैयारी थी
मंडप के चहुँ ओर भीड़ तब भारी थी
'तहव्वर खाँ' के उस हमले से भी पहले
सिंहनाद सुन मुगलों के थे दिल दहले

बुन्देलों ने घेर लिया 'तहव्वर खाँ' को
भागा तौबा करता ले अपनी जाँ को
उसके बाद किया था हमला 'नरवर' पर
'नरवर' भागा पैर धरे अपने सिर पर

'नरवर' से था बड़ा खजाना मिला उसे
अस्त्र-शस्त्र जाना पहचाना मिला उसे
यही क्षेत्र था मुगलों की जागीरों का
शाही सरदारों, का बड़े वजीरों का

छत्रसाल ने बड़ा खजाना छीना था
बादशाह का इस पर मरना-जीना था
इसको पाकर छत्रसाल था हर्षाया
इधर 'कालपी' पर भी मन था ललचाया

'अब्दुल समद' खड़ा था सम्मुख लड़ने को
बुन्देलों ने सोचा आगे बढ़ने को
लेकिन अब्दुल की सेना कुछ भारी थी
और बहुत सुलझी उसकी तैयारी थी

छत्रसाल को रोक दिया था अब्दुल ने
बढ़ता सागर टोक दिया था अब्दुल ने
फिर भी उनकी धन सम्पदा छीन लाये
जितना था बारूद वह पूरा बीन लाये

अब 'खैरा गढ़' पर भी हमला बोल दिया
छत्रसाल ने नया मोर्चा खोल दिया
'अनवर खाँ' को दो शर्तो पर छोड़ा था
बुन्देलो ने यहाँ 'अर्थ' भी जोड़ा था

'अनवर खाँ' ने कहा प्राण की भीख मिले
पुनः युद्ध न करने की भी सीख मिले
देने पर दो लाख, उसे तब मुक्ति मिली
छत्रसाल को इससे अद्भुत शक्ति मिली

इधर 'गवालियर' से 'एरच' तक उत्तर में
और 'मालवा' तक दक्षिण के घर-घर में
पश्चिम में 'नरवर' 'हमीरपुर' तक फैला
छत्रसाल का राज कुबेरों का थैला

चारों ओर उसी के ध्वज लहराते थे
सूबेदार उसी का ही यश गाते थे
छत्रसाल की विजय-पताका फहर गई
विन्ध्यवासिनी स्वयं वहाँ पर ठहर गई

एकादश सर्ग

स्वामी प्राणनाथ से भेंट

निरन्तर युद्ध से था श्रान्त सैनिक
मगर फिर भी नहीं था शान्त सैनिक
हृदय में कामना विश्राम की थी
नहीं अब भावना संग्राम की थी

भला क्या चाहता था वीर सैनिक
चला बन को अकेला धीर सैनिक
हृदय में थे विचारों के अजूबे
भले ही जीत आया था वह सूबे

अकेला चल पड़ा आखेट करने
घने जंगल में एकाकी विचरने
'मऊ' के पास ही रमणीक बन में
लगा वह घूमने उपवन विजन में

हुआ वह मुग्ध नैसर्गिक छटा पर
कि होता ज्यों पपीहा है घटा पर
भ्रमण करते हुए जिस ठौर पहुँचा
किस जैसे स्वर्ग के शिरमौर पहुँचा

कि ऋषियों का अनूठा रंग देखा
यही पर हो रहा सत्संग देखा
उतरकर अश्व से वह पास आया
था उसके मन, नया विश्वास आया

यहाँ देखें अनेकों ग्रामवासी
कि उनकी दृष्टि दर्शन की थी प्यासी
यही उपदेश देते सन्त देखे
बड़े संयत सरल श्रीमन्त देखे

सुना धर्मोपदेशों की कथा को
निभाया नियम से पूरी प्रथा को
कि सहसा कह उठे थे ग्रामवासी
अहो! यह वीर कैसा है प्रवासी

तभी उस ओर से आवाज आई
यह है 'बुन्देल खण्डी' वीर भाई
अरे यह छत्रसाल है ताज अपना
इसी से है सुरक्षित राज अपना

यह बुन्देला है माता का दुलारा
भवानी माँ का है यह भक्त प्यारा
उठो स्वागत करो जयकार बोलो
कि पावन नाम, बारम्बार बोलो

सुना जब नाम तो श्रीमन्त जागे
कथा कहते हुए वे सन्त जागे
कहा! स्वागत है हे युवराज आओ
भवानी भक्त हे! महाराज आओ

तुम्हारे कर्म के हम सब ऋणी हैं
कि पावन धर्म के हम सब ऋणी हैं
कहो कैसे हुआ इस ओर आना
यह निर्जन है बना कैसे ठिकाना

तभी उत्तर में वह रणधीर बोला
हृदय की बात कहता वीर बोला
इधर मृगया को वन में जा रहा था
कि आश्रम मार्ग से ही आ रहा था

तो कानों में मधुर संगीत की धुन
सुनाई दी मुझे उस गीत की धुन
जो मधुरिम स्वर में गाया जा रहा था
कि अनुपम शान्ति को बरसा रहा था

उसे सुनकर शरण में आ गया मैं
अनूठा सुख चिरन्तन पा गया मैं
सुपरिचय पूछना ही धृष्टता है
अकिंचन हूँ न मुझ में पात्रता है

तभी श्रीमन्त का ही भक्त बोला
विनय से, स्नेह से, अनुरक्त बोला
यह सद्गुरु 'देवचन्द' के शिष्य शोभित
यह 'स्वामीप्राण' ऋषि संज्ञा विभूषित

कि क्षत्रिय कुल में प्रगटे है प्रवरतम
ये स्वेच्छा से पधारे धीर अनुपम
भ्रमण का लक्ष है संस्कार देना
या भगवद् भजन का आधार देना

है औरंगजेब अत्याचार करता
या मत परिवर्तनों का वार करता
उसे भी प्यार से सत्पथ दिखाया
कि जा कर आगरा, सब कुछ सिखाया

ये नृप 'जसवन्त' जी से भी मिले थे
उदयपुर 'राजसिंह' से भी मिले थे
मगर सब व्यर्थ देखा भ्रम वहाँ पर
सभी कुछ तज चले आये यहाँ पर

यहाँ अब धर्म के उपदेश देते
कि शाश्वत कर्म के सन्देश देते
मिले हैं आपसे, संयोग है यह
विधाता का बनाया योग है यह

झुकाकर शीष चरणों को छुआ था
स्वयं ही वीर को अनुभव हुआ था
कि ज्यों चाणक्य ही सम्मुख खड़े हों
या 'स्वामी राम' जी से भी बड़े हों

श्री 'स्वामी प्राण' को सब कुछ समर्पित
या गुरूपद में किया यह राज्य अर्पित
विजयदशमी का पावन दिवस आया
किया अभिषेक सिंहासन बिठाया

कि मस्तक पर तिलक सिर पर मुकुट था
कि मंगल मन्त्र, मण्डित पुष्प पुट था
चतुर्दिक गूँजते थे जय के नारे
स्वयं श्रीमान हैं 'राजा हमारे'

दिया आशीष पावन 'प्राणस्वामी'
बनो सद्धर्म के सद्पन्थ गामी
तुम्हारी कीर्ति की फहरे पताका
कि उज्ज्वल ज्योति हो जलती श्लाका

प्रजा ने पुष्प, अक्षत किये अर्पित
हुए राजाधिराजों को समर्पित
कि अब सम्राट का पद या लिया था
प्रजा ने भी सहज अपना लिया था

द्वादश सर्ग

प्राण नाथ के आदेश से नयी व्यूह रचना

छत्रसाल ने पन्ना पर धावा बोला
गुरुवर के निर्देशों का पर्दा खोला
वीर अनेकों आये उसकी सेना में
ध्वज अनगित फहराये उसकी सेना में

जीता पन्ना की उस नई रियासत को
बड़ी सफलता थी यह नई सियासत को
जितने छोटे राजा थे सब साथ लिये
विजयी वीरों के हाथों में हाथ लिये

सामूहिक आक्रमणों के सिलसिले चले
छत्रसाल, लेकर अनन्त काफिले चले
निज बुद्धि चातुर्य और रण कौशल से
कूटनीति से या फिर पूरे दल-बल से

छत्रसाल था आगे बढ़ता चला गया
विजयी शिखरों पर ही चढ़ता चला गया
सन्धिपत्र लिखकर वह औरंगजेबों से
लापरवाह रहा उन मुगल फरेबों से

जीत लिया था उसने कई प्रदेशों को
किया प्रचारित अपने ही सन्देशों को
'अनवर खाँ' या फिर उन **'सदरूद्दीनों'** से
फौजदार, सय्याद, लतीफ संगीनों से

कर वसूल कर बड़ी दया कर छोड़ा था
घूम रहा ज्यों अश्वमेघ का घोड़ा था
क्या **'बहलोलखान'** कर पाया चालाकी
किया **'राजगढ़'** में ही युद्ध हुआ बाकी

बाहर से था छत्रसाल का वार हुआ
भीतर से बुन्देलों भरा प्रहार हुआ
लगा भागने जब 'बहलोल' उसे मारा
बुन्देले वीरों ने जीता गढ़ सारा

धरी रही 'बहलोलों' की सब चालाकी
जीत लिये वे किले रहे जो भी बाकी
किन्तु कुटिल औरंगजेब का पत्र मिला
सन्धिपत्र के रूप नवीन प्रपत्र मिला

छत्रसाल ने सन्धिपत्र स्वीकार किया
दक्षिण जाने का विचार साकार किया
तभी हो गया हमला औरंगजेबों का
सन्धिपत्र के पीछे छिपे फरेबों का

'गढकोटा' 'दमोह' और वह धामोनी
छिने छत्रसालों ने देखी अन होनी
किला छतरपुर का भी उसने खोया था
बुन्देलों का भाग्य बहुत ही रोया था

गैरहाजरी छत्रसाल की छली गई
जीती धरती उसकी वापिस चली गई
नेता के बिन हतबल थे सब बुन्देले
मुगल सैन्य आवारा बनकर थे खेले

फौजदार अफगानों के आक्रमण हुए
'मऊ' 'सहानियाँ' से भी थे आक्रमण हुए
किन्तु इधर जब छत्रसाल वापिस आया
'शेरखान' अफगानों का था दौड़ाया

इधर हुई भगवन्त सिंह की बलिदानी
भला 'मुहम्मद खानों' की किसने जानी
'मृत्यु हुई औरंगजेब की' कहर हुआ
गम से डूबा आज आगरा शहर हुआ

'फरूखसियर' 'दरशाहों' का काफिला चला
सत्ता के संघर्षों का सिलसिला चला
फौज भेजकर 'बंगश' को भी जीता था
छत्रसाल का इससे हुआ सुभीता था

छत्रसाल ने आठ दशक जब पार किये
बुन्देलों पर और कई उपहार किये
वृद्धावस्था में भी शेष जवानी थी
युद्धकला अब भी जानी-पहचानी थी

यद्यपि अभी जरूरत थी विश्रामों की
नहीं अवस्था थी अतिशय संग्रामों की
संकट सिर पर था 'बंगश' के हमले का
भय सम्मुख था फिर मुगलों के अमले का

ऐसे में सहयोग मराठों से माँगा
'बाजीराव' 'चिमाजी' का था ध्वज टाँगा
विन्ध्यवासिनी माँ को उसने याद किया
और पेशावाशाही को आबाद किया

मिला सन्देशा छत्रसाल का जैसे ही
चले मराठे सेना लेकर वैसे ही
कायम खाँ से युद्ध हुआ इतना भारी
घोड़े, हाथी, पैदल करते बमबारी

किन्तु मराठों की हिम्मत के क्या कहने
युद्ध क्षेत्र में बेहद रक्त लगा बहने
आखिर 'कायम खाँ' की हिम्मत टूट गई
सेना उसकी बिलकुल पीछे छूट गई

बाजीराव पेशवा के आ जाने से
वीर मराठों से सम्बन्ध बनाने से
छत्रसाल की हार जीत में बदल गई
बलिदानी की नई रीति में बदल गई

छत्रसाल ने इसी सत्य को जान लिया
'बाजी' को तीसरा पुत्र था मान लिया
वह जीवन पर्यन्त मौत से था खेला
अन्तिम समय बयासी का था बुन्देला

आओ उसकी इस समाधि को नमन करें
वीरोचित सम्मानों का अनुगमन करें
छत्रसाल जो वीर्यवान था महाबली
बुन्देले सरताज कि करियो भली-भली

❑❑❑